हमारी अगली पेशकश बहुत जल्द एक और किताब बनाम

सैय्यद उल औलिया

अज मुबल्लिग-ए-मदारियत हज़रत मौलाना
फ़रीद अहमद शिकोही मदारी, बहेड़ी

मंजर-ए-आम पर आने वाली है जिसमें शाहंशाह-ए-विलायत हज़रत सैय्यदना मदार-उल-आलमीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादत से लेकर विसाल तक के अहम वाकिआत व हालात, कश्फ व करामात, मरातिब व दर्जात, नारा ए 'दम मदार बेड़ा पार' की वजाहत, लफ़्ज ए 'मदार-उल-आलमीन' पर एतराजात का जवाब, 'जिंदा मदार' कहने की वजाहत और इनके अलावा भी सरबस्ता पहलुओं पर मुदल्लल व मुफस्सल बहस की गयी है।

अल्मुअलिनरू मौलाना जैगम फरीद मिस्बाही मदारी बहेड़ी

पेशकश : बज़्म-ए- हुज़ूर मुबल्लिग-ए-मदारियत, बहेड़ी

संपर्क नंबर: 8860464945, 8433046800

नात व मनाकिब का रुह परवर मजमूआ

गुलदस्ता-ए-शिकोही

तालिब-ए-इल्म

शकील अहमद शिकोही मदारी

बहेड़ी शरीफ (बरेली)
नाशिर : बज़्म-ए-हुज़ूर मुबल्लिग-ए-मदारियत
बहेड़ी बरेली

1

दम मदार ।।। बेड़ा पार

नात व मनाकिब का रुह परवर मजमूआ

गुलदस्ता-ए-शिकोही

तालिब-ए-इल्म

शकील अहमद शिकोही मदारी,

बहेड़ी शरीफ (बरेली)

नाशिर : बज़्म-ए-हुज़ूर मुबल्लिग-ए-मदारियत

बहेड़ी बरेली

2

किताब का नाम	गुलदस्ता ए शिकोही
साहिब ए किताब	तालिब ए इल्म शकील अहमद शिकोही जाफरी मदारी बहेड़ी जिला बरेली उत्तर प्रदेश
हस्बे हुकुम	उस्तादे मोहतरम मुबल्लिग ए मदारियत हजरत अल्लामा मौलाना फ़रीद अहमद साहब किब्ला शिकोही मदारी बहेड़ी शरीफ़ व उस्ताद ए
मोहतरम	हजरत अल्लामा मौलाना कारी अब्दुल कय्यूम साहब किबला इरम शिकोही मदारी सीतापुर
जमा व तरतीब	हज़रत मौलाना जैग़म फ़रीद मिस्बाही मदारी बहेड़ी शरीफ 8433046800 8860464945
पहला एडीशन	1000
सन इशाअत	सितंबर 2025
सफ़हात	100
नाशिर	बज्मे हुज़ूर मुबल्लिग ए मदारियत बहेड़ी
मिलने का पता	दारुल उलूम हंफ़िया मदरिया मदार चौक बहेड़ी जिला बरेली

3

बिस्मिल्लाह हिर्रेहमा निर्रहीम

अर्ज़े शिकोही

सब तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए जो दिलों को औलिया की मुहब्बत से रौशन फ़रमाता है और बेहद दुरूदो सलाम हों सय्यदुल मुर्सलीन ख़ातिमुल नबीअ़ीन सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम पर जिनकी निसबत पर ख़ैर की कुंजी है।

ज़ेरे नज़र मजमुआ ''गुलदस्ता-ए-शिकोही''उन नुफूस कुदसिया का एक मुख़्तसर तज़किरा है जिनसें मेरा रूहानी व इल्मी और निस्बती ताल्लुक क़ायम है यह मजमुआ न महज़ नाअ़त व मनाक़िब है बल्कि इश्के रिसालत व असहाब व अहलेबैत व औलिया अल्लाह और खुशबु-ए-मदारियत का एक अतिया हदिया व तबरूक है जो असहाबे निस्बत के दिलों को ताज़गी अता करेगा इंशाअल्लाह।

यह सआ़दत मुझे अपने अज़ीम उस्ताद बिरादरे अकबर

4

मुबल्लिगे़ मदारियत हज़रत अल्लामा मौलाना फ़रीद अहमद शिकोही मदारी बहेड़वी हिफ़्ज़ुल्लाह व हज़रत अल्लामा मौलाना क़ारी अब्दुल क़य्यूम शिकोही मदारी इरम सीतापुरी की बरकत से हासिल हुई जिनकी ईल्मी व अदबी तरबियत मेरे लिए मश़अले राह है।

____मेरे पीरो मुर्शिद हकीमुल उम्मत बाबा-ए-क़ौमो मिल्लत हज़रत अल्लामा सय्यद हकीम मुहम्मद वली शिकोह रज़िअल्लाह अन्हो का फ़ैज़ मेरे क़ल्ब व बातिन मे जारी है जिनकी नज़र ने मुझे इस राह का सालिक बनाया मैं अपने वालिद मोहतरम जनाब सईद अहमद जाफ़री मदारी और वाल्दा माजिदा मरहूमा अक़ीला जाफ़री का भी शुक्रगुज़ार हुँ जिन्होने इब्तिदाई दीनी शअूर इश्के रिसालत, असहाब व अहलेबैत व औलिया और बिलखुसूस निसबते मदारियत का ज़ौक मेरे अन्दर पैदा फ़रमाया।

मेरे अज़ीज़ ब्रादरज़ादा हज़रत मौलाना ज़ैग़म फ़रीद मिस्बाही मदारी सल्लमाहु ने इस गुलदस्ता-ए-शिकोही की

5

तरतीब व तसनीफ़ में मेहनत व अर्क़रेज़ी करके इसको मन्ज़रे आम पर लाने का बड़ा काम अंजाम दिया अल्लाह पाक इनको मज़ीद इल्मो अदब से माला माल फ़रमा कर सलामत व करामत रखे।

अल्लाह तआ़ला इस अदबी कोशिश को कुबूल फ़रमाऐ और इसे मेरे लिए और मेरे वालिदैन व मशाइख़ के लिए सदक़ा जारिया बनाये। आमीन

ख़ाकेपाए वली शिकोह
शकील अहमद शिकोही मदारी
मुहल्ला इस्लाम नगर, बहेड़ी ज़िला बरेली
मुक़ीम हाल देहली
मो. 8860464945

6

बराए इसाले सवाब

अल्लाह करीम का तुफ़ैले अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम व सादे़क़ीन व शोहदा व स्वालेहीन रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन मेरी इस काविशे आजेज़ाना में तुझे जो कुछ पसन्द हो उसके बदले मेरी वाल्दा माजिदा अक़ीला जाफ़री मरहूमा की मग़फ़िरत फ़रमा कर आला इल्लीईन में जगह अता फ़रमा। आमीन अल्लाहुम्मा आमीन।

मेरी वाल्दा जिनकी गोद मेरी पहली दर्सगाह बनी जिनकी आग़ोश में मैंने माँ की मुहब्बत के साथ साथ दीन की रौशनी से मुनव्वर हुआ जिन्होने मुझे महज़ बोलना ही नहीं सिखाया बल्कि मेरी घुट्टी में मोहब्बते अहलेबैत की निसबत घोल दी और बचपन ही से मेरे मरकज़े अक़ीदत हज़रत सय्यदना मदारूल आलामीन रज़िअल्लाह अन्हा की मुहब्बत मेरे दिल में बसा दी। जिन्होने अपनी ख़्वाहिशात को मेरी और मेरे बिरादराने गिरामी शेरे मदारियत हज़रत अल्लाम ख़लीक अहमद साहब मदारी मुबल्लिगे़ मदारियत हज़रत अल्लामा फ़रीद अहमद मदारी और

7

मुफ़क्किरे मदारियत हज़रत मुफ़्ती काशिफ़ सईद साहब मदारी पर कुर्बान करके कामयाबियों की राह पर गामज़न कर दिया ।

या अल्लाह उनके दरजात बुलन्द फ़रमा उनकी मग़फ़िरत फ़रमा उनकी तनहाई को अपनी रहमत से आबाद फ़रमा और उन्हे जन्नतुल फ़िरदौस में अपने महबूब बन्दों के साथ मुक़ाम अता फ़रमा।

शकील अहमद शिकोही मदारी
मुहल्ला इस्लाम नगर , बहेड़ी बरेली

8

इन्तिसाब

मैं अपने इस मंज़ूम ख़िराजे अक़ीदत ''गुलदस्ता-ए-शिकोही'' को अपने वालिदे ग्रामी को ख़लीफ़ा-ए-हुज़ूर आरिफ़ बिल्लाह ग़ौसेज़मा हज़रत ख़्वाजा सय्यद हिफ़्ज़ुर रहमान उर्फ़ निराले मियाँ मदारी आली जनाब सईद अहमद जाफ़री मदारी मद्दाज़िल्लाहुल आली और अपनी वाल्दा माजिदा मरहूमा अक़ीला जाफ़री (नव्वरल्लाह मरक़दहा) की जानिब मंसूब करके उनका मशकूर हूँ कि उन्होने इब्तिदा से ही मेरे अन्दर दीनी शअ़ूर इश्के रिसालत मआ़ब सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के साथ साथ मुहब्बते अहलेबैत व सहाबा व औलिया अल्लाह बिलखुसूस निसबते मदारिया का ज़ौक पैदा फ़रमाया अल्लाह पाक मेरी इस काविश को क़बूल फ़रमाये और मेरे वालिदैन करीमैन व मशाइख़े किराम और मेरे वास्ते सदक़ा ए जारिया बनाये। आमीन

ख़ाकेपाए वली शिकोह
शकील अहमद शिकोही मदारी
मुहल्ला इस्लाम नगर, बहेड़ी, बरेली
मुक़ीम हाल देहली

9

तक़रीज़े सईद

हुज़ूर हस्सानुलहिन्द मिस्बाहे दीनो मिल्लत ख़्वाजाए मदारियत शेख़ुल हदीस हज़रत अल्लामा मुफ़्ती पीर अश्शाह सय्यद ख़्वाजा मिस्बाहुल मुराद साहब क़िबला अरग़ूनी जाफ़री अल मदारी मद्दाज़िल्लाहुल आली वलनुरानी सज्जादानशीन ख़ानक़ाहे कुदसिया सरकार मदारूल आलामीन रज़िअल्लाह तआ़ला अन्हु मकनपुर शरीफ़।

नाअ़त की शायरी बहुत मुश्किल फ़न है नाअ़त में फसाहत व बलाग़त के साथ साथ एहतरामे रिसालत मलहूज़ रखना पड़ता है आज के शोरा शायरी से ज़्यादा तरन्नुम में दिलचस्पी रखते हैं यही सबब है कि शायरी रफ़्ता रफ़्ता आमयाना होती जा रही है

ज़ेरे नज़र किताब गुलदस्ता-ए-शिकोही इस शायरी का मजमुआ है जिसमें इल्मो अदब, तसव्वुफ़ व माअ़रफ़त की बस्ती मकनपुर शरीफ़ का रंग मिलता है और शायराना खुसूसियात के साथ साथ कैफ़ियात भी हैं यही दुआ है कि अल्लाह तलाआ शकील शिकोही मदारी के इस गुलदस्ता-ए-शिकोही को मक़बूले ख़ास व आम फ़रमाये। आमीन

मिस्बाहे वली 2 अगस्त 2025

10

हे वली तक़रीज़

शहज़ादाए हुज़ूर हस्सानुल हिन्द अल्लामा अदीब शायरे अस्तानाए क़ुतुबल मदार शहनशाहे तरन्नुम हज़रत अल्लामा पीर सय्यद शोहरत हुसैन साहब क़िबला शोहरत अदीबी मद्दाज़ल्लाहुल आली जाफ़री मदारी मकनपुर शरीफ़,मैं नाअ़त गो हूँ मेरी शायरी इबादत है। नाहमदहु व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम अम्माबाद

ज़ेरे नज़र किताब गुलदस्ता-ए-शिकोही अज़ीज़े सईद जनाब शकील अहमद शिकोही मदारी बहेड़वी का मजमुआए कलाम है माशा अल्लाह दिल बाग़ बाग़ हो गया इन सारी मसरूफ़ियात के बावजूद शायरी के लिए वक़्त निकालना शग़फ़ और ज़ौक़ से तआल्लुक़ रखता है मंज़िलें उसी को मिलती हैं जो चलता है और जब बन्दा इश्क़े नाअ़ते मुस्तफ़ा में मुनहमिक होकर बहरे इश्क़े सादिकुल अमीन में डूब कर ग़रीक मुश्ताके जमाले यार होकर कमाले इश्क की चोटी पकड़ना चाहता है तो सांसों का शेर भी उसके लिए ख़ल्ल बनता और कहता है कि

11

उसकी याद आई है सांसो ज़रा आहिस्ता चलो
धड़कनों से भी इबादत में ख़ल्ल पड़ता है..

(राहत इंदौरी)

शायर नाअ़त तो यहाँ तक चाहता है कि तमाम ज़िन्दगी ग़रीक़े यादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआ़ला अलैह वसल्लम हो, ज़िक्रे मुस्तफ़ा हो

यूँ ही किये जा ज़िक्रे मोहम्मद
सांस का क्या है आई ना आई

(अल्लाम अदीब मकनपुरी)

यूँ तो शायरी एक फ़न है और फ़न किसी का ख़ासा नहीं होता हैं हाँ जिस ज़ौक़ के गमले में यह पौदा उगता है उसे सरअ़त के साथ चमने शायरी बना देता है यानि उसके फुनून व लतीफ़े और ग़वामिज़ व नुकात से जल्द वाक़फ़ियत हो जाती है फिर उसकी तबियत के मुताबिक़ शेअ़र होते हैं इन्हे बा ज़ौक़ और शेअ़र दोस्त शायरों की फ़हरिस्त में एक नाम अज़ीज़ सईद जनाब शकील अहमद शिकोही मदारी बहेड़वी का भी है जिनकी लगन और मेहनत से यह मजमुआ कलाम गुलदस्ता-ए-शिकोही

12

आपके हाथों में है अल्लाह तबारको तआ़ला की बारगाह से नियाज़ में बसद आजज़ी दुआ करता हूँ कि रब्बुल आलामीन अज़ तुफ़ैले सय्यदुल अम्बिया व मुरसलीन सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम इस किताब को शर्फ़े क़बूल अता फ़रमाये और मौसूफ़ को बे पनाह अजर अता फ़रमाये, किताब को मक़बले अनाम बनाये। आमीन

फ़क़त वसल्लाम
सय्यद शोहरत अदीब मकनपुर शरीफ़

तक़रीज़

पीरे तरीक़त रहबरे राहे शरिअ़त औलादे मदारूल आलामीन शहज़ादाए हुज़ूर बाबाए क़ौमो मिल्लत हज़रत अल्लामा पीर हकीम सय्यद शादान शिकोह साहब क़िबला शिकोही मदारी मद्दज़िल्लाहुल आली मकनपुर शरीफ़

चिरागे़ नूर

नाअ़त गोई का हुआ आग़ाज़ बामे अर्श से
सिलसिला हस्सान बिन साबित के घर ता आ गया

(ख़्वाजा ए मदारियत)

• नाअ़त गोई कोई आसान काम नहीं है यह इश्क़ सादिक से ताल्लुक रखती है नाअ़त गो और इश्के अहमद न हो मुमकिन ही नहीं माशूक़ अपने इश्क को आवाज़ को अलफ़ाज़ के ज़ावियों में पिरोकर अपने जज़बात व एहसासात अक़ीदत व मोहब्बत, मिदहत व सना को अदब व एहतराम के साथ बारगाहे रिसालत में मंज़ूम फ्रेम में मढ़ कर पेश करते है तब इसे नाअ़त कहते हैं और जब इस अक़ीदत मन्दाना जुर्अत व हिम्मत को बारगाहे रिसालत में बारयाबी हासिल हो जाये तो इसका ताल्लुक सीधा गुम्बदे ख़िज़रा के मकीन से हो जाता है हज़रत अबू तालिब से शुरू होकर हज़रत अब्दुल्ला बिन रवा, हज़रत काब बिन मालिक, हज़रत हस्सान बिन साबित रज़िअल्लाह अन्हुम और ना जाने किस क़द्र अहले रिसालत से आज तक शोअ़रा बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम में बा क़दरे हिम्मत मदहा सराही का फ़रीज़ा अंजाम दे रहे हैं ऐसे ही बेशुमार ब ज़ौक़ शोअ़रा में एक नाम अज़ीज़े सईद जनाब शकील अहमद शिकोही मदारी बहेड़वी का भी है जो फन्ने शायरी से वाबस्तगी रख कर अपनी मोहब्बत का सबूत बा शक्ले गुलदस्ता-ए-शिकोही पेश कर रहे हैं अल्लाह तबारको तआ़ला की बारगाह में दुआ है कि इनकी इस सय्ये जमीला और काविशे जमीला को शर्फ़े क़ुबूल बख़्श कर किताब और साहिबे किताब को मक़बूले अनाम बनाये नीज़ अज़ीज़म शकील अहमद शिकोही साहब को हिम्मत और ताक़त इल्मो अमल में बरकतें अता फ़रमायें । आमीन और इस गुलदस्ता-ए-शिकोही को रहरवाने मंज़िल के वास्ते चिरागे़ नूर बनाकर इसकी रूह फ़िशायी से तारीकियों के पर्दा चाक करके रास्ता दिखाये आमीन।

फ़क़त वस्सलाम

अबुल अल हस्सान शादान शिकोह मदारी

दारूल नूर मकनपुर

तक़रीज़

मुबल्लिग़ मदारयित उस्ताज़ उल उलमा व उस्ताज़ उल शोरा हज़रत मौलाना फ़रीद अहमद साहब क़िब्ला शिकोही मदारी बहेड़ी शरीफ़ ख़ादिम दारूल उलूम हनफ़िया मदारिया, मदार चौक बहेड़ी।

अल्हमदोलिल्लाहि वहदाहु वस्सलातो वस्सलाम अला मल ला नबी बहदाहु सय्यदना व मौलाना मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल्लाहो अलैह वसल्लम व मिन उफ़्तदा बेहाज़ेही व अला सय्यदौना बदी उद्दीन मदारुद्दुन्या व उक़बा नातिया व मनक़बती शायरी उर्दू अदब का वह दरख़्शां बाब है जो इश्को अदब और रूहानियत के हसीन इम्तिेज़ाज से महवर है यह शायरी महज़ सिनफ़े सुख़न नही बल्कि दिलों की पाकी और रूह के सुकून का सामान है ''गुलदस्ता-ए-शिकोही'' इसी सिलसिले की दिलनवाज़ और रूह परवर काविश है जिसे अज़ीज़म बिरादरे असग़र शकील अहमद शिकोही ने अक़ीदत के गहरे समन्दर में ग़ोताज़न होकर मुरत्तब किया है।

इस मजमुआ़ के वर्क़ वर्क़ से इश्के रसूल सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की खुशबू आती है और हर शेर दिल के खुफ़िया ख़ानों को जगाकर पढ़ने वाले को हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के दरबारे मुक़द्स की जानिब मुतावज्जह कर देता है बिरादरे असग़र शकील शिकोही ने नाअ़त के अदब, लताफ़त और तहज़ीब को मुकम्मल तौर पर मलहूज़ रखते हुए जो इज़हारे मुहब्बत पेश किया है वह यक़ीनन लाइक़े तहसीन है।

इस मजमुआ में जहाँ अल्लाह पाक की हम्दो सना से दिल सुज़ानी होता है वही नाअ़ते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम और मनाक़िब अहलेबैत, ख़ुलफ़ाए राशिदीन व औलियाए कामेलीन क़ारी को रूहानी सफ़र पर ले जाते हैं वहीं इसका भी ग़लबा हो जाता है कि शायर ने अक़ीदत के जज़्बात को अल्फ़ाज़ का चौला पहनाकर शायरी के फ़न्नी पहलूओं को खुबसूरती से पेश किया है ।

अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि गुलदस्ता-ए-शिकोही को क़बूलियत की वह खुशबू अता

फ़रमाए कि हर आशिके रसूल का दिल मोअत्तर हो जाये और शकील शिकोही मदारी के क़लम को मज़ीद तासीर और दवाम बख़्शे और फ़ैज़ाने शिकोही हुज़ूर बाबा-ए-क़ौमो मिल्लत आरिफ़ बिल्लाह ग़ैसुसज़मा हकीम सय्यद मोहम्मद वली शिकोह अलैह रहमतो वल रिज़वान से मालामाल फ़रमाए आमीन। बजाहे नबीउल अमीन

फ़रीद अहमद शिकोही मदारी
ख़ादिम दारूल उलूम हनफ़िया मदारिया
मदार चौक बहेड़ी बरेली
मुक़ीमे हाल शहर बलराम पुर यू..पी.
असिस्टैन्ट टीचर प्राइमरी स्कूल

बिस्मिल्लाह हिर्रेमा निर्रहीम

तक़रीज़

हज़रत मौलाना क़ारी अब्दुल कय्यूम इरम शिकोही मदारी सीतापुरी

नहमदुहु व नुसल्लीमु अला रसूलेहिल करीम व अला आलेही व असाबेही अजमईन

शेर व शायरी का दौर सदियों से चला आया है। ज़मानाए जाहालियत में अरबी शोरा बे मक़सद और ग़ैर कारआमद शायरी में लगे हुए थे महबूब के लब व रूख़सार और उसकी नाज़ुक अंदाजी की तस्वीर कशी में अपनी पुरी कुव्वते गोआई सर्फ़ करते थे तहज़ीब व तमद्दुन ने अपने चेहरे से नक़ाब हटाई ज़माने मे खुशगवार दौर और इंकलाबी दौर नमूदार हुआ बा मक़सद और कारआमद शायरी इस्लाहे मुआशरा का सबब बनी। असनाफ़े सुख़न में से जिस सन्फ़ में मोहसिने इंसानियत मंज़हरे कुदरत मोहम्मदे अरबी सल्लल्लाहे अलैह वसल्लम की तशरीफ़ व तौसीफ़ और मदह व सना की जाये उसे नाअत गोई कहते हैं और यह हद दर्जा मुश्किल सन्फ़ है एसी पुरख़तर और

~~कांटों भरी वादी है जिसमें फूंक फूंक कर क़दम रखना पड़ता है~~ ज़र्रा बराबर भी लग़ज़िश शायर को ज़िल्लत के अमीक़ दलदल में ढकेल देती है बड़े बड़े अक़लीमे सुख़न के शहरयारों ने अपनी आजज़ी और दरमांदगी का एतराफ़ किया इस लिए कि आक़ा करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तारीफ़ व तौसीफ़ कमा हक़्क़ाहु ना मुमकिन है आपकी ज़ात ममदुए रब्बे कायनात है तो इस ख़ाकी बशर की क्या मजाल कि आपकी तारीफ़ व तौसीफ़ कर सके इसके बावजूद शोरा-ए-इस्लाम ने हर ज़माने में आपकी बारगाहे नाज़ में नज़राना-ए-अकीदत व मोहब्बत पेश किये और आक़ा के ज़िक्रे हसीन व जमील से अपने आप को मुशर्रफ़ करने की मुमकिन कोशिशें की और बारगाहे रिसालत माब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हक़ीक़ी गुलाम और गदा होने का सुबूत दिया है।

पेशे नज़र किताब (गुलदस्ता-ए-शिकोही) नाअ़त व मनक़बत का हसीन गुलदस्ता है जिसमें अशआर व कलाम की शक्ल में महकते हुए फूल सजाये गये हैं शायरे इस्लम आली जनाब शकील अहमद शिकोही मदारी जिनका आबाई ताल्लुक

बहेड़ी ज़िला बरेली शरीफ़ से है और मशरबी ताल्लुक व निसबत उस सरज़मीन से जो मोहताजे तारूफ़ नहीं जो सरज़मीन सदियों से इल्म व फ़न तहज़ीब व अदब तसव्वुफ़ व तरीक़त विलायत व करामत का गहवारा रही है जिसको मकनपुर शरीफ़ से ज़माना जानता है यह सरकार मदारूल आलामीन रज़िअल्लाहो अन्हो का फ़ैज़ान है और मुर्शिदेग्रामी वक़ार हुज़ूर आरिफ़े बिल्लाह वलीए कामिल अल्लामा हकीम सय्यद मोहम्मद वली शिकोह जाफ़री मदारी रहतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ है जिनकी निगाहे फ़ैज़ की बरकत व मआविनत से यह किताब मन्ज़रे आम पर आई परवर दिगारे आलम गुलदस्ता-ए-शिकोही को मक़बूल अवाम व ख़वास बनायें और साहिबे किताब को बेहतर सिला अता फ़रमाये। ज़रियाए बख़्शिश बनाये। आमीन

अब्दुल कय्यूम इरम शिकोही मदारी सीतापुरी
11-8-2025

तक़रीज़

नाज़िमे अहलेसुन्नत पीरे तरीक़त हज़रत मौलाना सय्यद मेराज अहमद साहब क़िबला वक़ारी मदारी बघौरी सितारगंज उत्तराखण्ड

रब्बुल इज़्ज़त की शाने कुदरत जिसने लफ़्ज़ कुन से पूरी कायनात को तख़लीक़ फ़रमाकर आलमे इंसानियत को बे बहा तोहफ़े से नवाज़ा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक पैग़ामे वहदानियत देने के लिए रब ने मबऊस फ़रमाया इस पैग़ाम को आम करने के लिए रब ने अपने महबूब को आख़री नबी बनाकर भेजा और उनकी तारीफ़ व वराफ़ाना लका ज़िकरक के ज़रिये की कहीं मुज़म्मिल कहीं मुदस्सर फ़रमाया रब ने अपने महबूब की शान में नाअ़त कही इस लिए सुन्नते ईलाही पर अमल करते हुए सहाबा से लेकर आज के दौर तक जहाँ सहाबा किराम उलमाए किराम ने हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नेअ़मतों की रिवायत को फ़रोग़ दिया वहीं औलिया अल्लाह भी इस्लाम क तवरीजो इशाअत के साथ हुज़ूर के इश्क को ईमान की तकमील के लिऐ ना गुज़ीर क़रार दिया और इश्के रसूल के हुसूल के लिए नाअ़त ख़्वानी को सबसे बेहतर ज़रिया क़रार दिया तमाम तर सलासिले तसव्वुफ़ में महाफ़िल नाअ़त ख़्वानी को खुसूसी मक़ाम हासिल है इश्के रसूल और हुब्बे अहलेबैत किराम व असहाबे किराम में सरशार हो कर जो घुट्टी वालिद मोहतरम सईद अहमद साहब ख़लीफ़ा जी मदारी ने बचपन में पिलायी थी इसका यह असर है शायरे इस्लाम बुलबले दरबारे बाबा वली शिकोह जनाब शकील अहमद शिकोही साहब का रूझान नातिया शायरी की तरफ़ माइल हुआ उनकी नाअ़तों में जज़्बे की सदाक़त के साथ अक़ीदे का भी इज़हार होता है इतने कम अरसे में शायरी के मैदान में जो मंज़िलें तय की हैं यह खुसूसी फ़ैज़ाने सरकार सय्यदना मदारूल आलामीन ज़िन्दा शाह मदार मकनपुरी है इससे यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं कि इनका मुस्तक़बिल ताबनाक है मुझे यक़ीन है कि जनाब शकील अहमद शिकोही के नातिया व मनक़बती मजमुआ गुलदस्ता-ए-शिकोही फ़रज़दाने इस्लाम आशिकाने रसूल मुहिब्बाने मदार आंखों से लगायेंगे ।

ख़ाकेपाए दरे मदार सय्यद मेराज अहमद व क़ारी मदारी भघौरी सिरातगंज उत्तराखण्ड

तक़रीज़

ख़तीबुल हिन्द हज़रत मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद काशिफ़ सईद साहब क़िबला जामई शिकोही मदारी ख़ादिमुल इफ़्ता वल तदरीस दारूल उलूम हनफ़िया मदारिया बहेड़ी शरीफ़ बरेली।

हयाते मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैह वसल्ल्म और सीरते रसूल के साथ उसवा-ए-हसना का ज़िक्र दर हक़ीक़त नाअ़त गोई का फ़न कहलाता है ज़ेरे नज़र किताब गुलदस्ता-ए-शिकोही बिरादरे अकबर लायक़े सद एहतराम जनाब शकील अहमद साहब शिकोही मदारी बहेड़वी का मजमुआ-ए-नाअ़त व मनाक़िब है इस मुखतसर मगर जामेअ़ मजमुआ में मदहे रसूल सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के बाब में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लीम की हयाते तय्यबा के तमाम गोशों का बयान नाअ़त गोई में किया गया है और इस फ़न के ज़रिये हुब्बे रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लीम के जाम व अक़ीदत के बेश बहा फूल लुटाये गये हैं अगरचे नाअ़त के ज़रिये मदहिया शायरी की बुनियाद पड़ी लेकिन इस सनफ़ शरीफ़ के ज़रिये ग़ुलू और मुबालग़े के दरिया भी बहाये गये इस लिए कहा जाता है कि सबसे मुश्किल सनफ़ नाअ़त गोई है यह मैदान बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है नाअ़तिया शायरी में एहतदाल पसन्दी और हक़ीक़त निगारी एक मुश्किल अमर है

लेकिन गुलदस्ता-ए-शिकोही के मुसन्निफ़ मौसूफ़ ने अपनी नातिया शायरी में इस अमर को भी बहुस्ने खूबी अदा किया है और यह सब उनके इल्मी घराने में पैदा होने के बाद इल्मी माहौल में नशोनुमा और सादाते मकनपुरी शरीफ़ से मंसूब बुज़ूर्गों की ख़िदमत का असर है यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिसको चाहाता है अता कर देता है। (अलकुरआन बहम्देहि तआला) मौसूफ़ अपनी असरी मसरूफ़ियत के बावजूद फ़न्ने शायरी में किस क़दर शग़फ़ रखते हैं और वालेहाना तौर पर उनके दिल में जब रसूल और इशके रिसालत और अक़ीदते औलिया किराम कि क़दर मोजज़न है इसका सबूत उनके नातिया व मनक़बतिया अश्आ़र फराहम करते हैं मैं बसद खुलूस वसद क़ल्ब रब्बे क़दीर की बारगाह में बतुफ़ैल नबी व आले नबी पंजतने पाक

अलैहिमुस्सलाम ब फ़ैज़े सरकार मदारूल आलामीन ब दुआए हुज़ूर दादा मियाँ और बइनायत मर्शिदे गिरामी हुज़ूर बाबा-ए-क़ौम व मिल्लत हक़ीम सय्यद मोहम्मद वली शिकोह मदारी व हुज़ूर फ़ातेह अजमेर अल्लाम सय्यद मोहम्मद मरगूब आलम रिज़वानअल्लाह अलैहिम अजमईन दुआ करता हूँ कि अल्लाह पाक (गुलदस्ता-ए-शिकोही)मजमुा-ए-नाअत व मनाक़िब को क़ुबूले हर ख़ास व आम फ़रमाये और शकील अहमद शिकोही को दुनिया व अख़िरत में इस अम्ले ख़ैर की एहसन जज़ा अता फ़रमाये। आमीन या रब्बुल आलामीन बजाहे सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहो अलैह वसल्लेम ब हक़्के मदारूल आलामीन ।

अज़ क़लम

मोहम्मद काशिफ़ सईद शिकोही बहेड़ी

तक़रीज़

महबूबुल मशाइख़ मुमताजुल शोरा हज़रत हाफ़िज़ व क़ारी सूफ़ी सय्यद मुबारक अली दिलकश जालौनवी साहब क़िबला क़ादरी मदारी चिश्ती अबुल उलाई शिकोही आगरा। ख़लीफ़ा हुज़ूर बाबा-ए-क़ौमो मिल्लत अल्लामा हक़ीम सय्यद मोहम्मद वली शिकोह साहब क़िबला जाफ़री अल मदारी रज़िअल्लाह तआ़ला अन्हो मकनपुर शरीफ़ जिला कानपुर, यू.पी.

अलहम्दो लिल्लाह रब्बुल आलामीन वस्सलाम अला सय्यदुल अम्बिया वल मुरसलीन अम्मा बाद। फ़ाउज़ू बिल्लाहि मिनअश्शैतुआ निर्रजीम बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम आप सभी को यह जान कर बेहद ख़ुशी होगी कि आशिक़े क़ुतबुल मदार शायरे ब वकार शेदाये पंजतन हज़रत सूफ़ी शकील अहमद शिकोही मदारी मुद्दाज़िल्लाहुल आली की नाअ़तों व मनक़बतों का हसीन व दिल कश मजमुआ गुलदस्ता-ए-शिकोही के नाम से मंज़रे आम पर आने वाला है जिसमें मौसूफ़ ने बहुत उम्दा बहुत खूबसूरत नाअ़तिया कलाम कहे हैं जब आप नाअ़तिया कलाम को पढेंगे तो इश्के रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

पायेंगे हर शेर इश्के मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लेम से लबरेज़ नज़र आयेगा बे साख़्ता आपकी ज़बाने मुबारक से सुब्हान अल्लाह सुब्हान अल्लाह की सदाऐं बुलन्द होने लगेंगी फ़क़ीर ने भी कई बार आपके कलामों का मुतआ़ला किया तो साफ़ साफ़ फ़ैज़ाने हुज़ूर सय्यदना क़ुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार दिखायी दिया यह बात क्यों न हो कि मज़हरे शाने विलायत हुज़ूर बाबा-ए-क़ौमो मिल्लत अल्लामा हकीम सय्यद वली शिकोह वली जाफ़री अलमदारी अलैहिर्रमा फ़ैज़अल बारी की चश्मे करम का नतीजा है और उनके उस्ताद मोहतरत उस्ताज़ुल शोरा मुबल्लिगे़ मदारियत हज़रत अल्लामा फ़रीद अहमद शिकोही साहब क़िबला दामतबरकातहुमुल आलिया की ख़ास तवज्जह व दुआओं का समरा है मुझे उम्मीद है कि आप हज़रता मद्दाहे ख़ैरूल अनाम शायरे इस्लाम हज़रत सूफ़ी शकील अहमद शिकोही मदारी के नातिया कलाम पढ़ कर अपनी खुसूसी दुआओं से नवाज़ेंगे और खुलूसो मोहब्बत के साथ अपनी पसंदगीए इज़्हार भी फ़रमायेंगे। अल्लाह तआ़ला हसनैन

करीमेन के नूरे नज़र सय्यदना मदारे आज़म व ग़ौसुल आज़म व हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के सदक़े में हज़रत सूफ़ी शकील अजमद शिकोही के नातिया कलाम गुलदस्ता-ए-शिकोही को मक़बूले आम फ़रमाऐ और मौसूफ़ की उम्र में बरकते अता फ़रमायें । इश्के रसूल व आले रसूल की रौशनी से क़ल्ब को मुनव्वर फ़रमाऐं। आमीन सुम्मा आमीन।

ख़ाकपाए मदारे आज़म

सूफ़ी दिलकश जालौनवी आगरा

राब्ता नं0 9368210988

29

मंज़ूम तक़रीज़
शहज़ादाए हुज़ूर मुबल्लिग़े मदारियत हज़रत मौलाना ज़ैग़म फ़रीद साहब मिस्बाही मदारी बहेड़ी शरीफ़

करले कुबूल मौला गुलदस्ता-ए-शिकोही
सदका शहे उम्म का गुलदस्ता-ए-शिकोही
मौला अली का सद्का गुलदस्ता-ए-शिकोही
ज़िन्दा वली का अतिया गुलदस्ता-ए-शिकोही
इश्क़े नबी है शामिल इसके वरक़ वरक़ में
तुम भी ज़रूर पढ़ना गुलदस्ता-ए-शिकोही
असहाबो अहले सरवर की मदह के तवस्सुल
रखेगी याद दुनिया गुलदस्ता-ए-शिकोही
फ़ैज़े वली शिकोह से तुझको शकील अहमद
दादा मियाँ ने बख़्शा गुलदस्ता-ए-शिकोही
हज़रत फ़रीद अहमद कारी इरम हों दिलकश
इन सब की है तमन्ना गुलदस्ता-ए-शिकोही

30

तेरे लिए शिकोही रब से दुआ है मेरी
बख़्शिश का हो ज़रिया गुलदस्ता-ए-शिकोही
ज़ैग़म की इल्तिजा है रब्बे कदीर पाये
मक़बूलियत का दर्जा गुलदस्ता-ए-शिकोही

अज़ कलम
ज़ैग़म फ़रीद मिस्बाही मदारी
11 अगस्त बरोज़ पीर 2025

31

रशहाते क़लम
पीरो मुर्शिद हज़रत अल्लामा मुफ़्ती हकीम सय्यद मोहम्मद वली शिकोह जाफ़री मदारी रहमतुल्ला अलैह

देख कर चश्मे तलब हसन सरापा आपका
कह उठी यह जलवाए यकता है जलवा आपका
कह रही हैं ज़र्रे ज़र्रे से शुआऐं फूट कर
जलवा गाह नूरे हक़ है शहर तैयबा आपका
हो नहीं सकता मोअ़य्यन आपका दौरे हयात
हर घड़ी हर एक लम्हा हर ज़माना आपका
कैसे कोई ज़हने बू जहली समझ पाये इसे
फर्श से ता अर्श जाना और आना आपका
साहिबे ततहीर और असहाब के हाथो शाहा
आज भी आलम में बटता है ख़जाना आपका
जब न होगा हश्र में इशियां शियारों का कोई
माइले लुत्फ़ो करम एहसास होगा आपका
मौत के आने से पहले है तमन्ना-ए-वली
देख ले आँखों से अपनी हुसने ख़िज़रा आपका

32

रशहाते क़लम
हुज़ूर हस्सानुल हिन्द हज़रत अलामा सैय्यद मोअ़ज़्ज़ हुसैन जाफ़री मदारी अदीब मकनपुरी रहमतुल्ला अलैह

नहीं है यूँ तो किसी का जवाब ना मुमकिन
मगर जवाबे रिसालतमआ़ब ना मुमकिन
उठायें आप जो अंगुश्त पाक सुऐ फ़लक़
दो नीम हो ना दिल महताब ना मुमकिन
हुज़ूर ही थे जो यह मंज़िले गुज़ार गये
वह ज़िक्रो फ़िक्र वह अहदे शबाब ना मुमकिन
कोई भी सरवरे आलम का चाहने वाला
फिरे जहाँ में बा हाले ख़राब ना मुमकिन
यह जानकर के रज़ाए नबी है मर्ज़ीए हक़
ना उभरेडूबा हुआ आफ़ताब ना मुमकिन
बयक निगाह जो लाये थे सरवरे आलम
अब आये ऐसा कोई इंकलाब ना मुमकिन
लिये है गौशए दामाने मुस्तफ़ा सर पर
अदीब और ग़मे रोज़े हिसाब ना मुमकिन

33

रशहाते क़लम

• हस्सानुल हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती पीर सय्यद ख़्वाजा मिस्बाहुल मुराद साहब क़िबला मिस्बाहे वली जाफ़री मदारी मकनपुर शरीफ़

राज़िक़ नहीं हो क़ासिम फ़ज़्ले खुदा तो हो
तुम ख़ालिके़ जहाँ नहीं ख़ैरूल वरा तो हो
मसजूद तो नहीं हो मगर मद्दाअ़ तो हो
काबा नहीं हो क़िबला अहले वफ़ा तो हो
वल्लाह तुम इलाह नहीं मेरे मुस्तफ़ा
नूरे उलूहिय्यत का हसीन आईना तो हो
कुछ भी हमारे पास नहीं है तो क्या हुआ
हम आसियों का हश्र में तुम आसरा तो हो
मिल जायेगी मुझे ग़मे कौनैन से निजात
मेरे नबी की चश्मे इनायत ज़रा तो हो
दोगे गुनाह गारों को परवानए निजात
मुंसफ़ि नह ं हो शाफ़अे रोज़े जज़ा तो हो
`मिस्बाह जाके गुम्बदे ख़िजरा की छाव में
रूदादे ग़म सुनाऊँ मैं इज़ने नवा तो हो

34

हम्दे रब्बुल आलामीन

तेरे हुज़ूर यह इसियां शियार आए हैं
मदद के वास्ते परवर दिगार आए है
गुनाह बख़्श दे मोला हमारे हम आसी
झुकाए अपनी जबीं अश्कबार आए हैं
अता तो कर दे रसूले करीम का सदक़ा
तेरे दयार में यह दिल फ़िगार आए हैं
लिये हुए तही दामन को ऐ ख़ुदा वन्दा
करम की भीक के उम्मीदवार आए
ईलाही लाज तू रखना गुनाहगारों की
इस भरम में सभी तेरे द्वार आए हैं
बक़ा-ए-दीन की ख़ातिर शिकोही हम सब कुछ
दिया जो तूने वह करने निसार आए हैं

35

हम्द बारी तआ़ला

ख़ालिके़ कौनो मकां अदना को आला करदे
एक जुगनू से दो आलम में उजाला कर दे
मालिके अर्ज़ व समा है वही रब्बे अकबर
अपने महबूब का जो चाँद खिलौना कर दे
रातको चाँद सितारों से सजाता है वही
एक सूरज से जो दुनिया में उजाला कर दे
हो जो मर्ज़ी तेरी ऐ दोनों जहाँ के ख़ालिक
मेरे तारीक मुकद्दर को सुरय्या कर दे
वक़्त आख़िर हो लबों पे मिरे कलमा तेरा
नूरे अहमद से मिरी क़ब्र मुजल्ला कर दे
वास्ता तुझको है महबूब का तेरे यारब
मेरी नज़रों को अता गुम्बदे ख़िज़रा कर दे
अर्ज. है यह शिकोही की ख़ुदाया तुझ से
पंजतन का मिरी नस्लों को भी शैदा कर दे

36

नाअ़ते पाक

हमारी ज़ीस्त का हासिल है मुस्तफ़ा का नगर
हमारी जान है और दिल है मुस्तफ़ा का नगर
ऐ जज़्बे शौक अदब का ना छोड़ना दामन
मेरी निगाहों की मंज़िल है मुस्तफ़ा का नगर
बक़िये पाक में असहाब व आले आक़ा हैं
गुनाहगारों का साहिल है मुस्तफ़ा का नगर
छुपाके रखते हैं जो बुग़्ज़ अपने सीनों में
उन्ही की मंज़िले मुश्किल है मुस्तफ़ा का नगर
हमारे क़ल्ब की धड़कन है गुम्बदे ख़िज़रा
तसव्वुरात की मंज़िल है मुस्तफ़ा का नगर
मक़ाम उनका दो आलम में हो गया आला
शिकोही जिनको भी हासिल है मुस्तफ़ा का

न ग र

37

नअ़ाते रसूले अकरम

रहमतों से पुर है गुफ़्तारे नबी
है अज़ीमुश्शान किरदारे नबी
जन्नतुल फ़िरदौस में वह जायेगा
है मयस्सर जिसको दरबारे नबी
मिल गई उसको शिफ़ा हर मर्ज़ से
हो गया है जो भी बीमारे नबी
दम बाख़ुद हैं देख कर असरा की शब
हज़रते जिबरील रफ़्तारे नबी
शौक से कलमा उमर ने पढ़ लिया
हो गया बू जेहल गद्दारे नबी
हुक्म सुनते ही चला फ़ौरन शजर
आ गया करने को दीदारे नबी
है शिकोही यह करम हस्सान का
लिख दिये मैंने भी अशआ़रे नबी

38

नाअ़ते रसूले अकरम

रन्ज व ग़म से वही महफ़ूज़ रहा करते हैं
ज़िक्र सरकार का जो सुबह व मसा करते हैं
क़ौले रहमान है मुर्दा न कहो तुम उनको
जान जो दीने मोहम्मद पे फ़िदा करते हैं
मेहर दुनिया की मुबारक हो तुम्हे अहले ज़र
मुझ पे सरकारे दो आलम ही दया करते हैं
सब पे होती है मोहम्मद के करम की बारिश
उनके अतवारे करम ख़ास हुआ करते हैं
ख़ुल्द से दूर ! जहन्नुम है ठिकाना उनका
पंजतन पाक से जो कीना रखा करते हैं
उस घड़ी नस्ले यज़ीदी पे अलम छाता है
जब अलम ताज़िये दुनिया में उठा करते हैं
शहरे तैयबा को शिकोही वही जाते है फ़क़त
मुस्तफ़ा हाज़री जिनको भी अता करते हैं

39

नाअ़त सरकारे दो आलम

भरा जहाँ से है दामन हर इक क़लंदर का
भिखारी मैं भी मुकद्दर से हूँ उसी दर का
पढ़ी है हमने भी तारीख़ सारे आलम की
नहीं है सानी सारे जहाँ में हबीबे दावर का
जो अहलेबैत के आशिक़ है खुल्द जायेंगे
सुनो यह क़ौल है सब अम्बिया के सरवर का
ना होता एक ही सजदा तमाम शब होती
मुअ़र्रेख़ीन से लिखखा नबी की दुख़्तर का
तुम्हारे नाम से मिलती है शान्ती मन को
है राज पाठ की चिन्ता ना लोभ डालर का
बहारें खुल्द की ख़्वाहिश नहीं मेरे दिल को
मिरी नज़र में है रौज़ा शफ़ीए महशर का
अदब से झुक गया दहलीज़ पर जो आक़ा की
बयां हो मर्तबा कैसे शिकोही उस सर का

40

नाअदे पाक

अक़ल है हैरान तैयबा देख कर
रहमते आलम का ख़िज़रा देख कर
ऐ शहंशाहे मदीना आपको
करते हैं अशजार सजदा देख कर
जाम कौसर का हमें देंगे हुजूर
प्यास से हमको बिलकता देखकर
ताइरे सिदरा ना क्यों ना आंखें मलें
मुस्तफ़ा का नूरी तलवा देख कर
उदनो मिन्नी की सदाऐं हर तरफ़
अर्श पर आक़ा को आता देख कर
ला मकां पर जलवाए रब्बुल उला
आ गये इक शब में आक़ा देख कर
रूह आदम में शिकोही रुक गई
नूरे अहमद का उजाला देख कर

41

नाअ़ते पाक

फ़ख़ से मंगते हबीब रब के कहलाते हम
सदकाए आले मोहम्मद रात दिन खाते हैं हम
जब कहीं पर महफ़िले मीलाद में जाते हैं हम
भर के दामन बरकतों से अपने घर आते हैं हम
मुनकिरीने ताज़िया के दिल को दहलाते हैं हम
परचमे अब्बास इस तरह लहराते हैं हम
रंजो ग़म की धूप से डरते नहीं इस वास्ते
ज़िक्रे पाके मुस्तफ़ा से दिल को बहलाते हैं हम
जश्ने मीलादुन्नबी 12 रबीउल नूर को
मुद्दतों से मिलके सारा शहर सजवाते हैं हम
हैं हमारी निसबतें सय्यद बदी उद्दीन से
अपनी क़िसमत पर इसी बाइस तो इतराते है हम
आते हैं उस दम शिकोही नूरे रब्बुल आलामीं
देख जब तारीकीए मरक़द को घबराते हैं हम

42

नाअते पाक

जिसकी हयात ताबऐ ख़ैरूल बशर नही
वल्लाह दो जहान में वह मोअ़तबर नही
आते हैं जिस जगह पे फरिश्ते हर एक पल
शहरे रसूले पाक सा कोई नगर नहीं
रौज़े पे अपने मुझको बुला लीजिए हुज़ूर
नादार हूँ ना पास मिरे मालो ज़र नहीं
रोज़ा तेरा, नमाज़ तिरी, रायगा है सब
दौलते नबी के इश्क की दिल में अगर नहीं
सदक़ा अता ह ो हज़रते हस्सान का मुझे
शेरो सुख़्न का मुझको मय्यसर हुनर नहीं
होगी वहाँ नसीब ज़्यारत रसूल की
तारीक़ीए लहद का शिकोही को डर नही

43

नाअ़ते रसूल

रहम का आसमान हैं आक़ा
बे निशां का निशान आक़ा
दुश्मने दीन भी यह कहते हैं
रहमते कुल जहान हैं आक़ा
अपनी इस्यां शिआ़र उम्मत पर
किस क़द्र मेहरबान हैं आक़ा
आके सिदरा पे रुक गये जिबरील
और गये लामकान हैं आक़ा
हो गई ईद हूरों ग़िलमां की
अर्श पर मेहमान हैं आक़ा
यूँ तो उम्मी लक़ब हैं वह लेकिन
इल्म की एक खान हैं आक़ा
जो शिकोही नहीं सहाबा के
उनसे कब शादमान हैं आक़ा

44

नाअ़ते रसूल

हुस्ने जिना न हुरों मलक खुशनुमा की बात
करते हैं हम तो मज़हरे रब्बुल उला की बात
सब अम्बिया व मुरसलीं और सारी उम्मते
महशर में कर रहे हैं शफ़ीउल वरा की बात
अक़्सा में जो इमाम सफ़े अम्बिया बना
करता है कुल जहान उसी मुस्तफ़ा की बात
करके वज़ू ज़बान का सल्ले अला से तुम
कीजिये अदब के साथ शह अम्बिया की बात
डरते नहीं यज़ीद के शयदाइयों से वह
जिनके लबों पे रहती है कर्बो बला की बात
मुनकिर मुझे सहाबा का कहता है ख़ारजी
जब भी शिकोही मैं करू मुश्किल कुशा की बात

45

नाअ़ते रसूले अकरम

आ गया बहरे तलातुम में सफ़ीना अब तो
दीजिए ऐ मेरे सरकार साहारा अब तो
अपनी बदहाली पे रोके ये मुसलमां बोले
कीजिए चश्मे करम शाहे मदीना अब तो
ऐ ख़ुदा कर दे अता प्यारे नबी के सदक़े
फ़तेह का अहले फ़लसतीन को मुज़दा अब तो
पुल पे मीज़ान पे कौसर पे भरम रख लेना
कह रहा है यही हर उम्मती आक़ा अब तो
ख़स्ता हाली पे हमारी ऐ शाहंशाहे उम्म
ख़ूब हस्ती है शबो रोज़ यह दुनिया अब तो
जिनको हासिल है शहे दीं की गुलामी का शरफ़
उनको पलको पे बैठाता ज़माना अब तो
बाबे जन्नत पे शिकोही को है रोके रिज़वान
शाफ़ए रोज़े जज़ा कर दो इशारा अब तो

46

नाअ़ते पाक

उसकी कौनेन पर हुकूमत है
अर्शे आज़म पे जिसकी शोहरत है
जो हैं उश्शाक सरवरे दीं के
क़ब्र में भी उन्हे सहूलत है
शम्ऐ नूरे रसूले अकरम से
हो गई दूर कुफ़्री ज़ुलमत है
मुस्तफ़ा आख़री हैं पैग़म्बर
ख़त्म उन पर हुई नबुव्वत है
अम्बिया मुक़तदी है अक्सा में
पाई सरकार ने इमामत है
इश्के आक़ा मिला है वरसे में
मेरी क़िसमत भी ख़ूब क़िसमत है
देख ले यह भी गुम्बदे ख़िज़रा
बस शिकोही की इतनी हसरत है

47

नाअ़ते रसूल

कैसे बचोगे रोज़े जज़ा के हिसाब से
रखते हो बुग़्ज़ आले रिसालते मआब से
मेहमान ला मकां के हुए जब रसूले पाक
जलवे ख़ुदा के आ गये बाहर हिजाब से
रहमत हर इक जहाँ के लिए हैं मेरे नबी
यह बात साफ़ हो गई उम्मुल किताब से
होंगे नबीए पाक के गुस्ताख़ देखना
महशर के हर मुक़ाम पे ख़ाना ख़राब से
पेशे ख़ुदा वह जायेगा किस मुँह से सोचिए
रखता है कीना जो भी बशर बू तुराब से
असहाब की बुलन्दिया करते हैं हम बयां
रौशन नुजूम हैं यह सभी माहताब से
निसबत मदारे पाक की दिल में रखते हैं जो
डरते नहीं शिकोही वह अफ़रा सि याब से

48

नाअ़ते पाक

जश्ने सरकार जो मनायेंगे
अपनी तक़दीर जगमगायेंगे
हश्र में हम गुनाहगारों को
शाफ़ऐ हश्र बख़्शवायेंगे
पहने तौक़े ग़ुलामी ए आक़ा
उम्मती उनके खुल्द जायेंगे
जामे कौसर से सब गुलामों की
तिश्नगी मुस्तफ़ा बुझायेंगे
इज़्न आक़ा का आयेगा इक दिन
हम भी शहरे मदीना जायेंगे
पाये आक़ा से मलके पेशानी
उनको जिबरील यूँ जगायेंगे
दूर होगी शिकोही तारीकी
जब लहद में हुज़ूर आयेंगे

49

नाअ़ते पाक

मोहतरम सारे वह इंसान हुए जाते हैं
दिल से जो आशिके रहमान हुए जाते हैं
निसबतें जिनकी हैं मज़बूत हबीबे रब से
दोनों आलम में वह ज़ीशान हुए जाते हैं
ज़ुल्म के बदले है लभाये मोहम्मद पे दुआ
अहले शर देख के हैरान हुए जाते हैं
जब से असहाब मोहम्मद का चलन छोड़ा है
दहर में रुसवा मुसलमान हुए जाते हैं
मुझ से मंगते पे भी हो चश्मे इनायत आक़ा
सब गदा आप के सुल्तान हुए जाते हैं
उस्वए सरवरे कौनेन पर चल कर सारे
सारे मस्अ़ले हश्र के आसान हुए जाते हैं
मदहे सरवर में यह अश्आ़र शिकोही तेरे
इश्के हस्सान की पहचान हुए जाते हैं

50

नाअ़ते पाक

इरम से बढ़ के हैं आराइशें शहरे मदीना की
मिलें हमको खुदाया कुर्बतें शहरे मदीना की
कुदूमे मुस्तफ़ा सल्ले अला की बरकतें देखो
बढ़ी दोनों जहाँ में अज़मते शहरे मदीना की
बुला कर शहरे मक्का से शंहशाहे दो आलम को
मेरे रब ने बढ़ा दीं इज़्ज़ते शहरे मदीना की
बहारें खुल्द की कुर्बान है इस सब्ज़ गुम्बद पर
लुभाती हैं इरम को रौनके शहरे मदीना की
रसूले पाक के सदक़े कहीं हों हम ज़माने में
पहुंच जाती हैं हम तक नेअ़मते शहरे मदीना की
मदारूल आलामीं के दामने अक़्दस के सदक़े में
मय्यसर है मुझे भी निसबतें शहरे मदीना की
हुए मन ज़ारा क़िबरी से शिकोही और भी ज़ाहिर
दिलों पर मोमिनों के रिफ़अ़ते शहरे मदीना की

51

नाअ़ते पाक

मुक़द्दर इस लिए ऊँचा है तेरा गुम्बदे खिज़रा
मकीं है तुझ में सरकारे मदीना गुम्बदे ख़िज़रा
है दिल का चैन आँखों का उजाला गुम्बदे ख़िज़रा
हर इक क़ल्बे परेशां का सहारा गुम्बदे ख़िज़रा
मिरी आंखों को मिल जायेगी बीनाई अगर तेरा
मय्यसर हो इन्हे नूरी नज़ारा गुम्बदे ख़िज़रा
रसूले पाक हैं आराम फ़रमा तुझ में इस बाइस
बड़ा है अर्श से भी तेरा रूतबा गुम्बदे ख़िज़रा
मेरी तख़्तीए दिल पर साफ़ आयेगा नज़र उसको
अगर कर दे उसे कोई दो पारा गुम्बदे ख़िज़रा
सदाऐं आ रही हैं अर्शे आज़म से फ़रिश्तों की
हर इक गुम्बद से आला है नबी का गुम्बदे ख़िज़रा
तेरा दीदार करते ही अजल आये शिकोही को
यहीं है आख़री उसकी तमन्ना गुम्बदे ख़िज़रा

52

नाअते पाक

हर एक लम्हा मेरे मुस्तफ़ा का दरवाज़ा
लगे है सदक़ व अदालत सख़ा का दरवाज़ा
वहाँ हुज़ूर को पहुंचे गुज़र गई सदियाँ
चमकता अब भी है ग़ारे हिरा का दरवाज़ा
हर एक ज़ख़्म का मरहम जहाँ पे मिलता है
दरे रसूल है ऐसा शिफ़ा का दरवाज़ा
वह लोग अपने मुक़द्दर पे नाज़ करते हैं
जिन्हे नसीब है ख़ैरूलवरा का दरवाज़ा
भटकने वाले भटकते रहें कयामत तक
हमे तो काफ़ी है शेरे ख़ुदा का दरवाज़ा
कटा के बाज़ू अलमदार ने ज़माने को
बता दिया कि यही है वफ़ा का दरवाज़ा
ईलाही कलमा ए तय्यब हो इसके होंटों पर
खुले शिकोही पे जिस दम क़ज़ा का दरवाज़ा

53

नाते पाक

दूर उससे हर एक उलझन है
जिसको हासिल नबी का दामन है
जिनको कहते हैं रहमते आलम
उनसे सारा जहाँ मुज़य्यन है
मज़हरे रब ऐ आमना के लाल
तुम पे क़ुरबान मेरा जीवन है
पा के तौक़े गुलामी ए आक़ा
फ़ख़्र करती यह मेरी गर्दन है
आंधियों से बुझा न मेरा चिराग़
इसमे हुब्बे नबी का रौग़न है
फ़ज़ले मौला से कल्बे मोमिन में
शमअ़ इश्के रसूल रौशन है
ऐ शिकोही उन्ही को याद करो
सब्ज़ गुम्बद में जिनका मसकन है

54

नाअ़ते पाक

बरोज़े हश्र करने आसियों पर साएबां पहुंचे
बचाने अपनी उम्मत को शफ़ीए आसियां पहुचे
जहाँ पर अक़्ले इंसानी का ना वहमो गुमा पहुंचे
शबे असरा मोहम्मद मुस्तफ़ा मेरे वहाँ पहुंचे
उबैदा हों क़तादा हों कि ख़ालिद या अबूज़र हों
हो ग़ुलामी की शह बतहा से लेने डिग्रियां पहुंचे
हर इक जानिब से आती हैं सदाऐं उदनो मिन्नी की
शहे अबरार जब अर्श उला के दरमियां पहुंचे
दुआऐं रद नहीं करता खुदाए दो जहाँ उसकी
वही बाबे इजाबत है जहाँ रूदादे मा पहुंचे
बुराक़े नूर पर तशरीफ़ फ़रमा हो के इक पल में
शबे मेराज सरकारे मदीना ला मकां पहुचे
ज़्यारत को मदीने की हुआ बेचैन जब भी दिल
शिकोही हम मदारूल आलामीं के आस्तां पहुंचे

55

नाअ़ते पाक

छुप गया है बदलियों में किबर और नफ़रत का चाँद
जगमगाया जिस घड़ी अल्लाह की अज़मत का चाँद
सारे आलम ने हर इक जानिब उजाले हो गये
आ गया जब आमना की गोद में क़ुदरत का चाँद
नस्ले आदम को बचाने ज़ालिमों के ज़ुल्म से
मुस्तफ़ा की ज़ात बन कर आ गया रहमत का चाँद
शर्म से सर झुक गये हैं बू लहब बू जहल के
हो गया जब रूनुमा सरकार की बिअ़सत का चाँद
करके हिजरत हुक्मे रब से साथ में सिद्दीक के
शहरे मक्का से मदीना आ गया शफ़क़त का चाँद
मुद्दतों से मेरे दिल में या खुदा है आरज़ू
देख लूं जाकर मदीना शफ़क़तो नेअ़मत का चाँद
मिल गया मुझको शिकोही दामने क़ुतबुल मदार
है मिरे दिल में मुनव्वर आप की उलफ़त का चाँद

56

नाअ़ते पाक

मज़हर रब्बुल उला कौनेन के मुख़्तार से
है मिरा रिश्ता मदीने के दर व दिवार से
छट गयीं तारीकियां हर सू उजाले हो गये
सारा आलम जगमगाया आमदे सरकार से
याद जिसको बदर की तारीख़ है इक आन भी
ख़ौफ़ खा सकता नहीं वह लश्करे कुफ़्फ़ार से
कलामए तय्यब जो पढ़ते हैं बसद नाज़ो अदा
पूछिये शाने नबी उन कंकरों व अश्जार से
जो हैं दुश्मन फ़ातिमा की आल के रोज़े जज़ा
वह नज़र कैसे मिलायेंगे शहे अबरार से
सामने हो रूऐ अनवर सरवरे कौनेन का
वक़्त आख़िर जब मेरा हो या खुदा संसार से
रौशनाई मेरे ख़ामे की न कम होगी कभी
है लगन मुझको शिकोही नाअ़त के अशआस से

57

नाअ़ते पाक

बे सहारों का सहारा सरवरे कौनो मकां
है तुम्हारा आसताना सरवरे कौनो मकां
भेजकर रूहुल अमीं को रब तआ़ला ने तुम्हे
अर्शे आज़म पर बुलाया सरवरे कौनो मकां
हो गई ं आसान सारी मुश्किलें इक आन में
वक़्ते मुश्किल जब पुकारा सरवरे कौनो मकां
मैं पढ़हू मरक़द में अपनी या नबी लाखो सलाम
देख कर जलवा तुम्हारा सरवरे कौनो मकां
हो इनायत आपकी तो सब्ज़ गुम्बद का कभी
मैं करूं आकर नज़ारा सरवरे कौनो मकां
गूंजता है आशिकाने औलिया की बज़्म में
आपकी मिदहत का नग़मा सरवरे कौनो मकां
फज़्ले रब से ऐ शिकोही हो गया मुझको नसीब
आपका पुर नूर शिजरा सरवरे कौनो मकां

58

मनक़बत

हज़रत सिद्दीके अकबर

कौन समझेगा जहाँ में मर्तबा सिद्दीक का
मुस्तफ़ा सिद्दीक के है और खुदा सिद्दीक का
दस्त बस्ता पूछती हैं आयशा सरकार से
मर्तबा बतलाईये या मुस्तफ़ा सिद्दीक का
कर दिया ऐलान यह शाहे उम्म ने मोमिनो।
बाद नबियों के बड़ा है मर्तबा सिद्दीक का
इसमें दाख़िल हो नहीं सकती है ज़ुल्मत दोस्तो
क़ल्ब में मेरे है रौशन कुमकुमा सिद्दीक का
जन्नती इंसान जिसको देखना हो देख ले
नाम आक़ा ने पुकारा बारहा सिद्दीक का
रौज़ाए महबूब में उनको जगह कर दी अता
इश्क आक़ा से ख़ुदा को भा गया सिद्दीक का
दौरे मुश्किल ख़त्म होगा ऐ शिकोही बिलयकीं
दीजिये रब्बुल उला को वास्ता सिद्दीक का

59

• मनक़बत

• हज़रत सय्यदना फ़ारूके आज़म

शहे दीं पे क़ुर्बान फ़ारूक़े आज़म
हैं इस्लाम की जान फ़ारूक़े आज़म
दुआ की ख़ुदा से शहे अम्बिया ने
हुए तब मुस्लमान फ़ारूक़े आज़म
हुआ तुम से क़ायम निज़ामे अदालत
अदालत की पहचान फ़ारूक़े आज़म
हमें पंजतन के तवस्सुल बना दो
मदीने का मेहमान फ़ारूक़े आज़म
बरोज़े क़यामत शहे दीं के सदक़े
बचाना मेरी आन फ़ारूक़े आज़म
अबू बकर व उसमान मौला अली का
लुटाते हैं फ़ैज़ाना फ़ारूक़े आज़म
अना के यह पुतले शिकोही पे तेरे
लगाते हैं बोहतान! फ़ारूक़े आज़म

60

मनक़बत

हज़रते उस्माने ग़नी

ख़ालिके कौनों मकां के दिलरुबा उस्मान हैं
सरवरे कौनेन की लुत्फ़ो अता उस्मान हैं
सब सहाबा जानते है बा हया उस्मान हैं
उस्वए सरकार से आरास्ता उस्मान हैं
दावते सिद्दीक पर इस्लाम को करके क़बूल!
मुस्तफ़ा से जुड़ गये बाज़ाबता उस्मान हैं
हुसने ज़ाहिर जिनका मिलता है ख़लीलुल्ला से
और मुशाबा मज़हरे रब्बुल उला उस्मान हैं
एक ज़ुन्नू रैन है और दुसरा ज़ुलहिजरेतैन है
और कई अलक़ाब से आरस्ता उस्मान हैं
देख कर जिनको सही करते हैं आक़ा भी लिबास
अल्लाह अल्लाह किस क़दर अहले हया उस्मान हैं
मर्तबा जिनका ख़ुदाए पाक ने ऊँचा किया
वह शिकोही नायबे ख़ैरूल वरा उस्मान हैं

61

मनक़ब हज़रत मौला अली

कह रहे है औलिया व असफ़िया मुश्किल कुशा
जानशीने शाफ़ेए रोज़े जज़ा मुश्किल कुशा
जिस तरह से है रसूलों में शहंशाहे उम्म
हैं उसी तरह इमामुल औलिया मुश्किल कुशा
यह अमल है आज़मूदा इस में कोई शक नहीं
मुश्किलों में काम आये हर जगह मुश्किल कुशा
है मिरे दिल को यक़ीं वह जायेगा फ़िरदौस में
जो भी है आशिक तुम्हारी आल का मुश्किल कुशा
यह अक़ीदत देखिये दीवानाए शब्बीर की
खुद बनाये खुद उठाये ताज़िया मुश्किल कुशा
उम्मते ख़रूलवरा पे अज़ तुफैले फ़ातमा
कीजिए चश्मे करम मुश्किल कुशा मश्किल कुशा
खुल गया मनकुन्तो मौला का शिकोही राज़ जब
तब सभी ने कह दिया मौला मेरा मुश्किल कुशा

62

मनक़बत हज़रत मौला अली

कौल है यह ताजदारे अम्बिया का या अली
जिसका मैं मौला हूँ तुम उसके हो मौला या अली
कह रहे है मिल कह यह जिन्नो बशर हूरो मलक
रश्के जन्नत है तेरा पुरनूर रौज़ा या अली
देख कर तेरी शुजाअ़त और तेरा जाहो जलाल
सब ने देखा बाबे ख़ैबरकांप उठ्ठा या अली
हश्र में पूछा गया तेरी विलायत का सवाल
ख़ुल्द में पहुंचा वही जिसने पुकारा या अली
अहले मक्का का तकब्बुर रेज़ा रेज़ा कर दिया
बदर में लहराया तूने दीं का झण्डा या अली
सरवरे कौनो मकां मुख़्तारे कुल ने आपको
बाबे शहरे ईल्म का बख़्शा है रुतबा या अली
गिर गई क़ल्बे मुनाफ़िक़ पर शिकोही बिजलियां
आशिकों ने जिस घड़ी नारा लगाया या अली

63

मनक़ब सय्यदा फ़ातिमा ज़हरा

तेरे औराक़े सीरत आबे ज़र हैं सय्यदा ज़हरा
तेरे चर्चे ख़ुदा के अर्श पर है सय्यदा ज़हरा
ख़दीजा माई की नूरे नज़र हैं सय्यदा ज़हरा
रसूलुल्लाह की लख़्ते जिगर हैं सय्यदा ज़हरा
झुके दहलीज़े नूरी पर तेरी जो चश्मे नम होकर
बने वह एक पल में ताजवर है। सय्यदा ज़हरा
बरोज़े हश्र करो फ़र से जब तशरीफ़ तुम लायीं
झुकी सब की निगाहे और सर है सय्यदा ज़हरा
लकब उम्मे अबेहा का दिया सरकार ने उनको
ख़ुदा जाने मोअ़ज़्ज़ किस क़दर हैं सय्यदा ज़हरा
जो तेरे और तेरी आल के दुशमन हैं दुनिया में
भटकते फिर रहे वह दर बदर हैं सय्यदा ज़हरा
शिकोही जैसे लाखो नाम लेवा फ़ज़्ले आक़ा से
बरोज़े हश्र दिखते बे ख़तर है सय्यदा ज़हरा

64

मनक़बत

हज़रत मौला हसन मुजतबा

कह रहे हैं अहले दिल अहले यक़ीं मौला हसन
हम शबीहे सरवरे दुनिया व दीं मौल हसन
रखती है आक़ा की उम्मत यह यक़ीं मौला हसन
आपकी जागीर है ख़ल्दे बरीं मौला हसन
अलमदद मैंने पुकारा जब कही मौला हसन
आ गये इमदाद को मेरी वहीं मौला हसन
आपके कुन्बे की ही कुर्बानियों से बिलयक़ीं
पा गया है रफ़अते दीनें मुबीं मौला हसन
तेरे वालिद को शबे हिजरत बनाये मुस्तफ़ा
अहले मक्का की अमानत का अमीं मौला हसन
आप ही हैं बादे सय्यदना अली उल मुर्तज़ा
जानशीने रहमतुल आलामीं मौला हसन
ख़ौफ़े दुनिया फ़िक्रे महशर इस लिए मुझको नहीं
हैंशिकोही क़ल्ब में मेरे मक़ीं मौला हसन

65

मनक़बत मौला हसन इब्ने अली

मसर्रत से दुनियां इमामे हसन का
पढ़े रोज़ ख़ुतबा इमामे हसन का
अरब क्या अजम क्या इमामे हसन का
है संसार सारा इमामे हसन का
पले जिसकी आग़ोश में शहे बतहा
वही तो है दादा इमामे हसन का
दिया ज़हर किसने उन्हे?क़ल्ब जिससे
हुआ पारा पारा इमामे हसन का
जो ठुकराये ताजे शही एक पल में
यह है काम किसका इमामे हसन का
वह ख़ुश बख़त मोमिन है वल्लाह जिसके
लबो पर है नग़म इमामे हसन का
कहो ताजदारे मदीना से दिलकश
शिकोही है मगंता इमामे हसन का

66

मनक़बत इमामो हुसैन शहीदे आज़म

राहते फातिमा नाम शब्बीर का
इब्ने शेरे ख़ुदा नाम शब्बीर का
रफ़अतें पा गया नाम शब्बीर का
जब नबी से जुड़ा नाम शब्बीर का
रोज़े महशर बना नाम शब्बीर का
बस मेरा आसरा नाम शब्बीर का
क़ल्ब को तब मिला एक पल में सुकूं
बा अदब जब लिया नाम शब्बीर का
हुक्म से हक़ तआ़ला के ऐ मोमिनों
मुस्तफ़ा ने रखा नाम शब्बीर का
देखना हो जिसे देख ले वह मेरे
क़ल्ब पर है लिखा नाम शब्बीर का
सुर्ख़रूई शिकोही मिली तब मुझे
विर्दे लब जब रहा नाम शब्बीर का

67

मनक़बत सरकार इमामे आली मक़ाम अलैहिस्सलाम

कांप जाते हैं यज़ीदी अब भी सुनकर कर्बला
देके सर इब्ने अली ने कर लिया सर कर्बला
रश्क यूं करते हैं तुझ पर माहो अख़्तर कर्बला
तुझ पे है आराम फ़रमा इब्ने हैदर कर्बला
तेरी रफ़अ़त को क़यामत तक बढ़ाने के लिए
आ गये सरदारे जन्नत आज तुझ पर कर्बला
नन्हे असग़र अपनी ऐड़ी को रगड़ देते अगर
तेरे अन्दर से निकलता हौ़ज़े कौसर कर्बला
हम सहाबा और अहलेबैत के उश्शाक़ हैं
हम हैं सुन्नी है हमारे दिल के अन्दर कर्बला
जिसमें बच्चे नौजवां बूढ़े सभी शामिल हैं वह
दफ़न है इब्ने अली का तुझ में लशकर कर्बला
एक यह भी है करामत फ़ातिमा के लाल की
तज़करा होता है तेरा अब भी घर घर कर्बला
ऐ शिकोही हज़रत शब्बीर के फ़ैज़ान से
बन गई है इल्मो हिकमत का समन्दर कर्बला

68

अज़मत ताज़िया शरीफ़

है अक़ीदत का मेरी नूरी समन्दर ताज़िया
और है निसबत का इक पाकीज़ा झूमर ताज़िया
सर बुलन्दी उसको हासिल हो गई कौनेन में
बा अदब रख्खा है जिसने अपने सर पर ताज़िया
रह गयी हैं बासवीं रज़्ज़ाक की आँखें खुली
देखे जब अरवाहे शोहदा तेरे अन्दर ताज़िया
ऐ यज़ीदे शाम के पैरो हमें बतला ज़रा
दिल में क्यूं चुभता है तिरे मिस्ले नश्तर ताज़िया
है हमारे वास्ते हुज्जत दरे क़ुतुबे मदार
और मोईन उद्दीन के है आसतां पर ताज़िया
रोकने के सारी कोशिश हो गई हैं रायगां
रोक ना पाया कोई फ़तवा लगाकर ताज़िया
ऐ शिकोही जो मुख़ालिफ़ ताजियादारी के हैं
वाक़ई है उनकी ख़ातिर एक ख़ंजर ताज़िया

69

मनक़बत सय्यदना इमाम क़ासिम

हुसैन पाक का लशकर इमामे क़ासिम हैं
शुजाअ़तो का समन्दर इमामे क़ासिम हैं
समेटे कुव्वते हैदर इमामे क़ासिम हैं
शबीहे हज़रते शब्बर इमामे क़ासिम हैं
मचाते खलबली पहुंचे यज़ीदी ख़ैमे तक
रूके किसी से ना दम भर इमामे क़ासिम हैं
यज़ीदी लशकरे जर्रार के मुक़ाबिल में
अकेले मिस्ले गज़न्फ़र इमामें क़ासिम हैं
हर एक सिमत हैं लाशो के डेर करबल में
चलाते तेग़ को सर सर इमामे क़ासिम हैं
लरज़ते फ़ौज़े यज़ीदी के पहलवां सारे
तुम्हारे रोब से थर थर इमामे क़ासिम हैं
शिकोही दीन पे कुर्बान हो के कर्बल से
पहुंचते ख़ुल्द के अन्दर इमामे क़ासिम हैं

70

मनक़बत सरकारे इमाम ज़ैनुल आबिदीन

फ़ातहे ख़ैबर हैं दादा आबिदे बीमार का
नूर वाला है घराना आबिदे बीमार का
क्या बताऊं मै है क्या क्या आबिदे बीमार का
है नजफ़ तय्यबा पे क़ब्ज़ा आबिदे बीमार का
जो वफ़ादारे हुसैन इब्ने अली है बस वही
पढ़ते रहते हैं क़सीदा आबिदे बीमार का
डर नहीं सकता यज़ीदी भेड़ियों से वह कभी
याद है जिसको भी खुतबा आबिदे बीमार का
औलिया अल्लाह का हो या किसी का भी गिरोह
है हर इक लब पर तराना आबिदे बीमार का
जो ग़मे शब्बीर में रोना बताते हैं ग़लत
उमर भर देखें वह रौज़ा आबिदे बीमार का
ऐ शिकोही मिल गया है पीरो मुर्शिद के तुफ़ैल
मरहबा पुर नूर शिजरा आबिदे बीमार का

71

मनक़बत इमाम मुहम्मद बाक़र

नबी से मिलता है शिजरा इमामे बाक़र का
हुसैने पाक है दादा इमामे बाक़र का
वह नूरे चश्म हैं सज्जाद के इसी बाइस
नजफ़ मदीना व मक्का इमामे बाक़र का
जो अहलेबैत का दुशमन हो नार में जाये
है बाग़े ख़ुल्द पे क़ब्ज़ा इमाम बाक़र का
इमामे जाफ़र सादिक़ ने इल्म का सदक़ा
अबू हनीफ़ा को बख़्शा इमामे बाक़र का
ख़ज़ाने इल्म के सब जिसने कर दिये ज़ाहिर
बहुत अज़ीम है रुतबा इमामे बाक़र का
क़बूलियत का शर्फ़ उसको कर अता मौला
लिखा जो मैंने क़सीदा इमामे बाक़र का
शिकोही रंजो अलम हो गये मेरे काफ़ूर
हुआ जो अदना इशारा इमामे बाक़र का

72

मनक़बत इमामे जाफ़रे सादिक

बना जो आपका सरकार जाफ़रे सादिक़
हुआ वह खुल्द का हक़दार जाफ़रे सादिक़
अदब से चूम के सर पर उसे मैं रख लुंगा
मिले जो आपकी पैज़ाद जाफ़रे सादिक़
तुम्हारे दर की गदाई है रश्के ताजे शही
करूं क्या ले के मैं दस्तार जाफ़रे सादिक़
मिला है उनको विरासत में इल्म बाक़र का
फ़ज़ीलतों के है शाहकार जाफ़रे सादिक़
दिला के फ़ातहा बाईस रजब को करते हैं
अक़ीदतों का हम इज़हार जाफ़रे सादिक़
बचाना गर्मिये महशर से इस शिकोही को
तुफ़ैले हैदरे कर्रार जाफ़रे सादिक़

73

मनक़बत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा

क़ुबूल करके इमामत अबू हनीफ़ा की
समझ में आ गयी रिफ़अत हबू हनीफ़ा की
अली से देखो अक़ीतदत अबू हनीफ़ा की
है ईल्मे दीं पे महारत अबू हनीफ़ा की
मिला जो सदकए बाक़र इमाम जाफ़र से
तभी बढ़ी है लियाक़त अबू हनीफ़ा की
पकड़ के काबा का दर पढ़ लिया है रब का कलाम
अज़ीम तर है इबादत अबू हनीफ़ा की
जहाँ में कसरते अहनाफ़ है इसी बाइस
करी मदार ने मिदहत अबू हनीफ़ा की
हदीसे पाक शहे अम्बिया बताती है
बढ़ाई रब ने फ़ज़ीलत अबू हनीफ़ा की
शिकोही कैसे क़सीदे लिखूं मैं दुनिया के
मुझे है सिर्फ़ ज़रूरत अबू हनीफ़ा की

74

अज़मते असहाब व अहलेबैते किराम

उसने पाया हौसला असहाब व अहलेबैत का
जो भी शैदा हो गया असहाब व अहलेबैत का
जुज़ मोहम्मद मुस्तफ़ा और ख़ालिके कौनेन के
कौन जाने मर्तबा असहाब व अहलेबैत का
बादे आक़ा सबसे अफ़ज़ल हज़रत सिद्दीक हैं
है उसी पर इत्तिफ़ा असहाब व अहलेबैत का
चाहिये खुल्दे बरीं में दाख़िला तो मोमिनो
करते रहिये तज़किरा असहाब व अहलेबैत का
सर झुका कर आज भी उश्शाके ख़त्मुल मुर्सलीन
मानते हैं फ़ैसला असहाब व अहलेबैत का
हो गया मनकुन्तो मौला से यह ज़ाहिर वाक़ई
है अली ही बादशाह असहाब व अहलेबैत का
ऐ शिकोही फ़ैज़ से सय्यद बदी उद्दीन के
बन गया मैं भी गदा असहाब व अहलेबैत का

मनक़बत हज़रत बा यज़ीद बस्तामी

75

है जहाँ हैरानो शशदर ब यज़ीदे पाक का
देख कर रूहानी पावर बा यज़ीदे पाक का
है हबीब अजमी सा रहबर बा यज़ीदे पाक का
और बदी उद्दीन दिलबर बा यज़ीदे पाक का
बरसरे महफ़िल कहा है ये जुनैदे पाक ने
औलिया में है न हमसर बा यज़ीदे पाक का
महफ़िले अक़ताब हो या महफ़िले अग़वास हो
है नहीं चर्चा कहाँ पर बा यज़ीदे पाक का
वास्ते हैं तीन जिसमें मुस्तफ़ा तक बिलयकीं
देख लो शिजरा उठा कर बा यज़ीदे पाक का
आ गये कशकोल लेके तालिबान अहले हक़
माअ़रफ़त का पीने साग़र बा यज़ीदे पाक का
ऐ शिकोही सरवरे कौनो मकां के फ़ैज़ से
ज़िक्र है दुनिया में घर घर बा यज़ीदे पाक का

मनक़बते सरकार मदारूल आलामीन

76

जब जलाई आपने शम्मे हिदायत या मदार
हो गया तब नूर से पुरनूर भारत या मदार
मजमए असहाब में तेरी हक़ीकत या मदार
खुद बताते हैं शहंशाहे रिसालत या मदार
क्या हक़ीक़त है ख़फ़ीफ़ुल हाज़ की असहाब से
मुस्तफ़ा ने उसकी कर दी है वज़ाहत या मदार
आये हैं शाहे उम्म काज़ी अली अल्वी के घर
जब हुई तेरी विलादत व सआदत या मदार
हुक्म आक़ा से अली मुश्किल कुशा ने बख़्श दी
औलिया की सफ़ में तुमको अफ़ज़लियत या मदार
हो किसी भी हाल में लेकिन यकुम शव्वाल को
हम मनायेंगे तेरा जश्ने विलादत या मदार
यह शिकोही भी तुम्हारे आस्तां का है गदा
कीजिए इसको को अता अज़्ने ज़्यारत या मदार

मनक़बते मदारुल आलामीन

टली हर एक मुसीतब मदारे आज़म से
मिली है क़ल्ब को राहत मदारे आज़म से
मिलेगी बस उन्हे जन्नत मदारे आज़म से
जो कर रहे हैं मोहब्बत मदारे आज़म से
हर एक साकिने हिन्दुस्तान ने पाई
नबी के इश्क़ की दौलत मदारे आज़म से
हमे मिली है विरासत में ऐ जहाँ वालो
रसूले पाक की चाहत मदारे आज़म से
लिखा है हज़रते मखदूम पाक ने मुझको
मिला है ख़रक़ए उल्फ़त मदारे आज़म से
इसी सबब मुझे कहते हैं सब गुलामे मदार
अटूट है मिरी निसबत मदारे आज़म से
ग़म व अलम की तपिश में हज़ार बार मुझे
शिकोही मिलती है हिम्मत मदारे आज़म से

मनक़बते मदारुल आलामीन

ख़ुदाए पाक ने रखा तेरा सय्यद बदी उद्दीन
नबी की आल में हिस्सा तेरा सय्यद बदी उद्दीन
ज़मीने हिन्द ही क्या हमने देखा सारे आलम में
मिला हर इक जगह चिल्ला तेरा सय्यद बदी उद्दीन
हो माहरेरा कछौछा काल्पी या वह बरेली हो
है पहुंचा हर जगह शिजरा तेरा सय्यद बदी उद्दीन
बुझी तब तिशनिगी मखदूम अशरफ़ ने सुंकू पाया
अता जब हो गया ख़िरका तेरा सय्यद बदी उद्दीन
मुजद्दिद अल्फ़ेसानी ने लिखा मक़तूब में अपने
हक़ीक़त में है क्या ! रूतबा तेरा सय्यद बदी उद्दीन
जहाँ हर रोज़ आती हैं अबाबीलें ज़्यारत को
है ऐसा खुशनुमा रौज़ा तेरा सय्यद बदी उद्दीन
शिकोही औज पर उसका मुक़द्दर है दो आलम में
है जो भी चाहने वाला तेरा सय्यद बदी उद्दीन

मनक़बत मदारुल आलामीन

एहसान मुझ पे देखिये परवर दिगार का
दामन मुझे नसीब है कुतबुल मदार का
करने को आये हुक्मे रसूले करीम से
हिन्दोस्तां में ख़ातमा तुम अंधकार का
सदियों तलक न सहरी व अफ़तार जिसने की
कुतबुल मदार नाम है उस रोज़ादार का
मक़तूबे अल्फ़ेसानी में लिखा है साफ़ यह
सानी नहीं है वलियों में कुतबुल मदार का
तारीकिया मिटाने को सारे जहाँ की
निकला है देखो चाँद फ़लक़ पर मदार का
जिसका है सर क़दूमे रिसालत तले सुनो!
पढ़ते हैं हम क़सीदा उसी ताजदार का
अहले नज़र शिकोही यह कहते हैं झूम कर
ख़िज़रा के मिस्ल लगता है रौज़ा मदार का

नक़बत मदारुल आलीमन

औलिया में आप सबसे मोहतरम ज़िन्दा मदार
है नबी का आपके सर पर क़दम ज़िन्दा मदार
सदक़ाए ख़ैरूल बशर और सदक़ाए मौला अली
दूर हो दिल से मिरे रंजो अलम ज़िन्दा मदार
दीजिये सदक़ा हसन बसरी हबीब अजमी का अब
आ गये हैं आस्तां पर तेरे हम ज़िन्दा मदार
हाल पर मेरे तुफ़ैले बा यज़ीदे पारसा
कीजिए लिल्लाह अब चश्मे करम ज़िन्दा मदार
हुक्म पाकर सरवरे कौनेन का इस हिन्द में
दीन का लहरा दिया तुमने अलम ज़िन्दा मदार
आपके उश्शाक को तेवर बदल कर देख ले
किस जरी में इतनी जुर्रत इतना दम ज़िन्दा मदार
बस यह हसरत है शिकोही की निगाहों में रहे
आपके रौज़े की जाली मरते दम ज़िन्दा मदार

81

मनक़बत मदा+ल आलीमीन

हर तरफ़ नूरी समा है नूर की बोहतात है
उर्से सरकारे मदारुल आलामीन की रात है
सबसे पहले हिन्द में भेजा है जिसे सरकार ने
वह बदी उद्दीं मदारुल आलामीन की ज़ात है
आपके होते मदारुल आलामीन दिल पर मेरे
यह अचानक क्यों ग़मों की हो गई बरसात है
आपके उश्शाक ने अजमेर में कुतबुल मदार
मुनकिरीने सिलसिला को दी भयानक मात है
आपके होते हुए ऐ सय्यदी ज़िन्दा मदार
यह मुख़ालिफ़ हम से उलझें उनकी क्या औक़ात है
है सुनहरे हर्फ़ से तारीख़ में लिखा हुआ
मोहसिने हिन्दुस्तां कुतबे जहाँ की ज़ात है
दामने उम्मदी भर दीजिये शिकोही का हुज़ूर
आपके रौज़े पे बटती रात दिन ख़ैरात है

82

मनक़बते मदारुल आलामीन

फ़ातेह ख़ैबर की इतरत हज़रते ज़िन्दा मदार
क़ल्बे ज़हरा की हैं राहत हज़रते ज़िन्दा मदार
आले सरकारे रिसालत हज़रते ज़िन्दा मदार
हैं शहंशाहे विलायत हज़रते ज़िन्दा मदार
सरनिगों है तेरी आला शख़्सियत के सामने
चिश्तियत और क़ादरियत हज़रते ज़िन्दा मदार
मोहसिने हिन्दुस्तां तक़वा तुम्हारा देख कर
महवे हैरत है विलायत हज़रते ज़िन्दा मदार
मअ़ मुरीदों पीर वह नारे सक़र में जायेगा
जो रखे तुझसे अदावत हज़रते ज़िन्दा मदार
कुफ़्र के घंघोर बादल थे यहाँ चारो तरफ़
आये है जिस वक़्त भारत हज़रते ज़िन्दा मदार
देख लीजिये इस शिकोही की ग़मो अलम से
किस क़द्र है ख़स्ता हालत हज़रते ज़िन्दा मदार

83

मनक़बत मदारुल आलामीन

क़ल्ब मुज़तर मचलकर कर पुकारा आ गया उर्स कुतबे जहाँ का
गा रहे है सभी यह तराना आ गया उर्स कुतबे जहाँ का
बज रहा है हर इक सिमत डंका आ गया उर्स कुतबे जहाँ का
कह रहा है यह हर एक शयदा आ गया उर्स कुतबे जहाँ का
चाँद देखा है जब से फ़लक पर ईद के जैसी खुशियां है घर घर
सारे आलम में है बस यह शोरा आ गया उर्स कुतबे जहाँ कार
रौज़ाए पाक ज़िन्दा वली पर है लगाती अबबीले चक्कर
किस क़दर है हसीं यह नज़ारा आ गया उर्स कुतबे जहाँ का
हाजतें ले के सब दिल के अन्दर है जमा आशिकों का समन्दर
आज हर इक का दामन भरेगा आ गया उर्स कुतबे जहाँ का
औलिया जिसके ताबेअ़ है सारे जिसके रूख़ पर पड़ी हैं नक़ाबे
उमर भर जिसने रखा है रोज़ा आ गया उर्स कुतबे जहाँ का
आज झोली सभी की भरेगी सोच के मैंने बस यह शिकोही
ख़ाली दामन को अपने पसारा आ गया उर्स कुतबे जहाँ का

84

मनक़ब्त मदारुल आलामीन

वह बना संसार में बेहतर मदारुल आलामीं
हो गये तुम पर मेहरबां जिस पर मदारुल आलामीं
आशिकाने अहलेबैते मुस्तफ़ा के वास्ते
ख़ुल्द का ज़ीना है तेरा दर मदारुल आलामीं
ताज जिसका हैं कुदूमे शाफ़ेअ़ रोज़े जज़ा
कितना आला है तुम्हारा सर मदारुल आलामीं
मुद्दतों से लौ लगी है आपके दरबार से
ख़ाली दामन अब तो दीजिए भर मदारुल आलामीं
सबसे पहले हिन्द में तबलीग़ करने आये हो
तुम अताए मुस्तफ़ा ( ) बनकर मदारुल आलामीं
रहमते आलम के सद्के कातिबे तक़दीर ने
लिख दिया क़ल्बे शिकोही पर मदारुल आलामीं

85

मनक़बत मदारुल आलामीं

ग़म व अलम ने किया है मुझे निढाल बहुत
तुम्हारे नाम की मुझको फ़क़त है ढाल बहुत
तुम्हारे टुकड़ों पर पलते हैं हम मदार जहाँ
हमारे जैसों का रखते हो तुम ख़्याल बहुत
है जो भी मुनकिरे कुतबुल मदार महशर में
उन्ही को देगा सज़ा रब्बे जुलजलाल बहुत
संभाल कर रखों निसबत मदारियों अपनी
गली व कूंचा हैं बैठे हुए दलाल बहुत
जिन्हे नज़र नहीं आती मदार की तबलीग़
हैं उनके वास्ते दुनियां में अस्पताल बहुत
मिलायें कैसे भला कोई आंख सूरज से
मदार अपाके चेहरे पे है जमाल बहुत
अता हुई है तेरे दर से ऐसी भींक इसे
शिकोही हो गया मालामाल दुनिया में बहुत

86

मनक़बत मदारुल आलामीन

क़सम अल्लाह की उसको मिली है हर जगह इज़्ज़त
मदारुल आलामीं की बस गई जिस दिल में है उल्फ़त
बरोज़े हश्र जागेगी हमारी बख़ुदा क़िसमत
मिलेगी हर मदारी को नबी के हुक्म से जन्नत
मदारे पाक आयें है यहाँ हुक्मे नबी पाकर
मुनव्वर हो गई है साकिनाने हिन्द की क़िसमत
वह चाहें क़ादरी हो अशरफ़ी हों या के हों चिश्ती
है पाई कुल सलासिल के बुज़ुर्गों ने तेरी निसबत
नहीं एहसान है हम पर किसी के बाप दादा का
मदारे पाक ने बख़्शी हमें ईमान की दौलत
मिला सकता नहीं कोई बशर भी आंख सूरज से
है किसको ताब जो देखे मदारे पाक की सूरत
अलीयुलमुर्तज़ा के लाडले सय्यद बदी उद्दीन
शिकोही उमर भर करता रहेगा आपकी मिदहत

87

यौमे मदारुल आलीमीन

आओ दुनिया को बता दें आ गया यौमे मदार
मिल के सब खुशियां मनायें आ गया यौमे मदार
क़ादरी व नक़्शबन्दी अशरफ़ी चिश्ती सभी
यक ज़बा होकर पुकारें आ गया यौमे मदार
झूमता आया फ़लक पर चाँद भी शव्वाल का
आओ हम महफ़िल सजायें आ गया यौमे मदार
या मदारुल आलामीं की हिन्द में हर इक तरफ़
गूंज उठी हैं सदाऐं आ गया यौमे मदार
ऐ अता ए मुस्तफ़ा मीलाद तेरा छोड़ कर
ईद हम कैसे मनाऐं आ गया यौमे मदार
आलमे इस्लाम को दीजिए मुबारकबादियां
ले के खुशियों की बहारें आ गया यौमे मदार
ऐ शिकोही रहमतुल आलामीं के फ़ैज़ से
ताने रहमते की रिदायें आ गया यौमे मदार

88

मनक़बत ग़ौसे पाक

यह ही दुआ हर पहर ग़ौसे आज़म
मैं देखूं तेरा संगे दर ग़ौसे आज़म
लिखा जिस सफ़ीने पा हो नाम तेरा
वह कैसे हो नज़रे भंवर ग़ौसे आज़म
तमन्ना मेरी काश हो जाये पूरी
हो चौखट तेरी मेरा सर ग़ौसे आज़म
जो रखता है निसबत तेरे आस्ता से
नहीं उसको दुनिया का डर ग़ौसे आज़म
है मुद्दत से हसरत दिले नातवां की
दिखा दीजिए अपना दर ग़ौसे आज़म
मदारे जहाँ की दुआओं से पाए
नसीबा ने दोनों पिसर ग़ौसे आज़म
बुला लो शिकोही को चौखट पे अपनी
कभी भेज कर तुक ख़बर ग़ौसे आज़म

89

मनक़बत ख़्वाजा ग़रीब नवाज

मर्तबा आपका कैसे ना हो ऊँचा ख़्वाजा
हर नसब से है नसब आपका आला ख़्वाजा
जब कभी मुझको ज़माने ने सताया ख़्वाजा
आपकी ज़ाते मुकद्दस को पुकारा ख़्वाजा
मैं तो कमज़ोर था लाचार था गिर जाता मगर
तेरी रहमत ने मुझे बढ़के संभाला ख़्वाजा
ले के जायेगा वह महशर में अली की उलफ़त
दिल से जो हो गया इक बार तुम्हार ख़्वाजा
तेरी आमद से छटे कुफ़्र के बादल सारे
दीने हक़ का हुआ हर सिम्ब उजाला ख़्वाजा
है तमन्ना मेरी इक रोज़ मैं अजमेर शरीफ़
देख लूं आके कभी आपका रौज़ा ख़्वाजा
हिन्द में जितने हैं उश्शाक अली इब्ने अली
सबके लब पर है फ़क़त नाम तुम्हारा ख़्वाजा
क्यों न हो सुबह व मसा क़ल्बे शिकोही रौशन
इसमे है आपकी उलफ़त का उजाला ख़्वाजा

90

मनक़बत मसूद ग़ाज़ी

जहाँ में नियारे हैं मसूद ग़ाजी
मुक़द्दर संवारे है मसूद ग़ाज़ी
यह जो चाँद तारे हैं मसूद ग़ाज़ी
तेरा दर निहारे हैं मसूद ग़ाज़ी
हमारे सहारे हैं मसूद ग़ाज़ी
नबी के दुलारे हैं मसूद ग़ाज़ी
तुफ़ैल हुसैन व हसन ख़ुल्द पर भी
तुम्हारे इजारे हैं मसूद ग़ाज़ी
मदार जहाँ के है जितनेभी शैदा
फ़िदा तुम पे सारे है मसूद ग़ाज़ी
करो चश्मे रहमत कि अब गर्दिशो में
सितारे हमारे हैं मसूद ग़ाज़ी
शिकोही ने जो मनक़बत की मुकम्मल
यह तेरे इशारे है मसूद ग़ाज़ी हैं

91

मनक़बत जानशीन मदारुल आलामीन

क्या बतायें आपको क्या सय्यदी अरग़ून हैं
सरवरे कौनो मकां की रौशन अरग़ून हैं
सोचिये कितने मुक़द्दर के धनी अरग़ून हैं
जानशीने हज़रत ज़िन्दा वली अरग़ून हैं
एक हैं तैफ़ूर दादा दूसरे फन्सूर शाह
आपको महबूब दोनों ही अख़ीअरग़ून हैं
हश्र हो या क़ब्र हो कहते हैं सब अहले यकीं
आसरा हम आशिक़ों का वाक़ई अरग़ून हैं
इनके शहज़ादों की शोहरत आज भी है हिन्द में
अहले इरफ़ां के लिए हाँ क़ीमती अरग़ून हैं
जिससे पाई है ज़माने ने मदारी निकहतें
वह गुले बाग़े अली व फ़ातमी अरग़ून हैं
ऐ शिकोही इन से मांगो सदक़ाए मौला अली
क्यूंकि यह अल्लाह प्यारे वली अरग़ून हैं

92

मनक़बत मख़दूम अशरफ़

बना वह मोअ़तबर और बा फ़ज़ीलत अशरफ़े सिमनां
जिसे हासिल हुई तेरी क़राबत अशरफ़े सिमनां
करा दो अपने रौज़े की ज्यारत अशरफ़े सिमनां
चमक जाये मिरी धुंधली सी क़िसमत अशरफ़े सिमनां
तुफ़ैले पंजतन हम आशिक़ाने शाहे बताह पर
ख़ुदारा कीजिए चश्मे इनायत अशरफ़े सिमनां
मदार पाक ने बख़्शा तुम्हे ख़िरक़ा ख़िलाफ़त का
मदारी मिल गई तुमको भी निसबत अशरफ़े सिमनां
मोहम्मद मुस्तफ़ा के दीन की तबलीग़ करने को
चले आए हैं ठुकराके हुकूमत अशरफ़े सिमनां
लिखा तुम ने लताईफ़ में मदारी सिलसिला जारी
सनाबिल की नहीं हमको ज़रूरत अशरफ़े सिमनां
शिकोही कह रहा है वह बशर तक़दीर वाला है
तुम्हारे दर से है जिसको भी रग़बत अशरफ़े सिमनां

93

मनक़बत सरकार जानेमन जन्नती

है मदारे दो आलम से ऐसा वास्ता जानेमन जन्नती का
मुस्तफ़ा जानेमन जन्नती के और ख़ुदा जाने मन जन्नती का
इनका आशिक़ है मसरूर हर दम
उसको दुनिया व उक़बा का क्या ग़म
दोनों आलम में मुनकिर रहेगा ग़मज़दा जानेमन जन्नती का
घर में बीबी नसीबा के जा कर जिस्मे मुर्दा को फिर से जिलाकर
जानेमन नाम ज़िन्दा वली रख दिया जानेमन जन्नती का
जो मदारे जहाँ की अता है ग़ौसे आज़म का जो भांजा है
कितना मज़बूत है मुस्तुफ़ा से राब्ता जानेमन जन्नती का
अज़मतों का बनाया है हामिल करके आले मोहम्मद में शामिल
हक़ तआ़ला ने ऊँचा किया है मर्तबा जानेमन जन्नती का
है यह क़ौले शहंशाहे तय्यबा ख़ुल्द में काम कया उस बशर का
जो है मुनकिर जलेगा सक़र में देखना जानेमन जन्नती का
अज़ तुफ़ैले मदारे दो आलम रौशनी अब ना होगी कभी कम
क़ल्ब में है शिकोही के रौशन कुमकुमा जानेमन जन्नती का

94

मनक़बत साबिरे पाक

चमके क़िसमते के सितारे हज़रते साबिर पाक पिया
काश हो तेरे इशारे हज़रते साबिर पिया
कह रहा है हरबशर कर दो करम की इक नज़र
बे सहारों के सहारे हज़रत साबिर पिया
बादशाहों की नज़र में किस क़दर मुमताज़ हैं
आपके ख़ुद्दाम सारे हज़रत साबिर पिया
तुमको हासिल है मदारूल आलामीं की निसबतें
तुम शहे बतहा के प्यारे हज़रते साबिर पिया
उस बशर की मुशिकलें वल्लाह सारी दूर हों
जो तुम्हे दिल से पुकारे हज़रते साबिर पिया
कीजिए बाबा फ़रीद उद्दीन का सदक़ा अता
कह रहे हैं ग़म के मारे हज़रते साबिर पिया
असल में वह ज़िन्दगी है ज़िन्दगी है जिन्दगी
जो तिरी चौखट पे वारे हज़रते साबिर पिया
है शिकोही की तमन्ना उमर की कुछ सआते
आके कलियर में गुज़ार हज़रते साबिर पिया

95

मनक़बत ख़ुर्शीद अहमद दादा मिया बहेड़ी

है जबीं मेरी तेरी चौखट पे ख़म दादा मियाँ
अज़ तुफ़ैल पंजतन कर दो करम दादा मियाँ
आपकी तौसीफ़ कैसे हो रक़म दादा मियाँ
आप है आले शहंशाहें उम्म दादा मियाँ
कीजिए कुतुबे बहेड़ी इक निगाहे अलतफ़ात
किस क़द्र घेरे हुए है मुझको ग़म दादा मियाँ
हज़रते सुब्हान का सदक़ा अता कर दीजिए
मांगने हम आए हैं बा चश्मे नम दादा मियाँ
हिफ़्ज़ो रहमा और ज़हीर उद्दीन दादा के तुफ़ैल
देखकर आऊँ शहे दीं का हरम दादा मियाँ
आपकी शाने मुकद्दस का नहीं कोई जवाब
आपकी हस्ती बड़ी है मोहतरम दादा मियाँ
ऐ शहंशाहे बहेड़ी आपका दर छोड़ कर
दरबदर हाथों को क्यू फ़हलायें हम!दादा मियाँ
दूर रह कर हो गये बरसों शिकोही को मगर
याद आती है तुम्हादी दम ब दम दादा मियाँ

96

मनक़बत सरकार दादा मियाँ बहेड़ी

तेरी दहलीज़ पर ख़म जिनके सर ख़ुर्शीद अहमद है
ज़माने में वही बस मोअतबर ख़ुर्शीद अहमद हैं
रसूल अल्लाह के लख़्ते जिगर ख़ुर्शीद अहमद हैं
बदी उद्दीन के नूरे नज़र ख़ुर्शीद अहमद हैं
बनाते हिफ़्ज़ुर्रहमा और ज़हीर उद्दीन दादा को
विलायत का अनोखा ताजवर ख़ुर्शीद अहमद हैं
बा फ़ज़्ले रब बहेड़ी के हर इक सुन्नी हुसैनी पर
लुटाते आज भी लाल व गौहर ख़ुर्शीद अहमद हैं
है रहते जिसके साय में बहेड़ी के सभी सुन्नी
मदारियत का इक ऐसा शजर ख़ुर्शीद अहमद हैं
निराले पीर की तुरबत निराली देख लो आकर
इधर सय्यद ज़हीर उद्दीन उधर ख़ुर्शीद अहमद हैं
बनाते थे शिकोही ताज़िया ख़ुद अपने हाथों से
फ़िदा ऐसे हुए शब्बीर पर ख़ुर्शीद अहमद हैं

97

मनक़बत शाहजी मियाँ

हैं वफ़ादारे मोहम्मद मुस्तफ़ा शाहजी मियाँ
और शयदाये अली उल मुर्तज़ा शाहजी मियाँ
हज्र में है इक ज़माने से तड़पता मेरा दिल
अपने दर पर अब मुझे लीजिए बुला शाहजी मियाँ
आलिम व मुफ़्ती मुजद्दिद और मोहद्दिस बिलयकीं
जान व दिल से सब हुए तुम पर फ़िदा शाहजी मियाँ
कुतबियत का ताज बख़्शा है खुदाए पाक ने
मर्तबा है किस क़द्र आला तेरा शाहजी मियाँ
मुश्किलों की अब नहीं है कोई परवाह उसे
सिजके लब पर है तुम्हारा नाम या शाहजी मियाँ
नाम है हज़रत मोहम्मद शेर महबूबे खुदा
और लक़ब है अल्लाह अल्लाह आपका शाहजी मियाँ
इस शिकोही की मदारे दो जहाँ के वास्ते
कीजिए हसनैन का सदक़ा अता शाहजी मियाँ

98

मनक़बत कुतबे आलम
सय्यद कल्बे अली मदार र.अ.

आप आले सरवरे दुनिया व दीं कल्बे अली
आपका होता है चर्चा हर कहीं कल्बे अली
कीजिए चश्मे करम उश्शाक की जानिब शाह
अज़ तुफ़ैले शाह ख़त्मेमुर्सलीं कल्बे अली
जब कभी मैंने मुसीबत में उन्हे आवाज़ दी
आ गये इमदाद को मेरी वहीं कल्बे अली
वाक़ई हैं वह वफ़ादारे मदारुल आलामीं
निसबतें है आपसे जिनकी जुड़ी कल्बे अली
आपके उर्से मुबारक की सजेगीं महफ़िलें
आने वाली है सफ़र पच्चीसवीं कल्बे अली
है महक इसमें अली व फ़ातिमा हसनैन की
आपका रौज़ा है कितना दिलनशीं कल्बे अली
तेरे सदके में नसीबा जगमगाएगा मेरा
है शिकोही को मुकम्मल यह यकीं कल्बे अली

99

मनक़बत बाबाए क़ौमो मिल्लत

प्यारे नबी के दिलबर बाबाए क़ौम व मिल्लत
औलादे इब्ने हैदर बाबाए क़ौम व मिल्लत
तेरी अता है जिन पर बाबाए क़ौम व मिल्लत
वह बन गये सिकन्दर बाबाए क़ौम व मिल्लत
लहरा दिये है तुमने दीने नबी के परचम
तुम दीने हक़ के रहबर बाबाए क़ौम व मिल्लत
अपने हो या पराये फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा से
सबकी भरी है गागर बाबाए क़ौम व मिल्लत
ओझल हुए हो जब से तुम ज़ाहिरी नज़र से
जीना हुआ दोबर बाबाए क़ौम व मिल्लत
अजमेर से मुख़ालिफ़ भागे हैं मुँह छुपाकर
देखे जो तेरे तेवर बाबाए क़ौम व मिल्लत
जब से रखा तख़ल्लुस मैंने शिकोही अपना
चमका मेरा मुकद्दर बाबाए क़ौम व मिल्लत

100

मनक़बत बाबाए क़ौम व मिल्लत

जिसको नसीब है तेरा दामन वली शिकोह
कैसे कहे उसे कोई निर्धन वली शिकोह
पाकर तेरे चिराग़ से रोग़न वली शिकोह
कितने चिराग़ हो गये रौशन वली शिकोह
हासिल हुआ है दामने कुतबे जहाँ मुझे
निसबत का तुम से जोड़ के बंधन वली शिकोह
ख़ैरुल वरा के लाडले हैदर के दिल का चैन
कुर्बान तुम पे है मेरा तन मन वली शिकोह
आते हैं तेरे दर पे मुरीदों के काफ़िले
फिर क्यूं है मेरे वास्ते कदग़न वली शिकोह
कहती है सरज़मीने मकनपुर झूम कर
कुतबुल वरा के फ़ैज़ का दपर्ण वल शिकोह
कहते हैं ऐ शिकोही यही अहले माअ़रफ़त
मिट्टी तुम्हारे दर की है चन्दन वली शिकोह

101

मनक़बत सय्यद अहमद शरीफ़ मियाँ भघौरी सितारगंज

ज़ेरे लब उसके रहेगी मिदहते अहमद शरीफ़
होगयी जिसको मय्यसर उलफ़ते अहमद शरीफ़
उसकी क़िसमत का सितारा आ गया फ़िर औज पर
जिसको हासिल हो गई है तुरबते अहमद शरीफ़
उनकी अज़मत के तराने क्यों न गाये हम भला
निसबतें कुतबुलवरा है निसबते अहमद शरीफ़
वह अली और सय्यदा ज़हरा की आले पाक हैं
इस सबब है इस जहाँ में शोहरतें अहमद शरीफ़
आप ने की दीन की तबलीग़ हर सुबह व मसा
कैसे भूलेगी भघौरी ख़िदमते अहमद शरीफ़
हज़रते सय्यद सिराज अहमद है सज्जादा नशीं
रब ने बख़्शी है उन्हे हर ख़सलतें अहमद शरीफ़
ऐ शिकोही यह मदारी गुलिस्तां का फ़ैज़ है
चार सू फैली हुई है निकहते अहमद शरीफ़

102

नक़बते हुज़ूर सय्यद मेहदी मियाँ

फ़ज़्ले रब्बे किबरिया हैं हज़रत मेहदी मियाँ
और आले मुस्तफ़ा हैं हज़रत मेहदी मियाँ
आपकी ज़ाते मुकद्दस को किया रब ने बुलन्द
आप फ़खरुल औलिया है हज़रत मेहदी मियाँ
उसवए सरकार जिसमें साफ़ आता है नज़र
एक ऐसा आईना हैं हज़रत मेहदी मियाँ
हो गये जिससे मुनव्वर अहले ईमां के कुलूब
वह हिदायत का दिया है हज़रते मेहदी मियाँ
जितने हैं उश्शाक अहलेबैत और असहाब के
उनके दिल का मुद्दाअ़ है हज़रत मेहदी मियाँ
जाके मिलता है शंहशाहे मदीना से नसब
आप आली मर्तबा हज़रत मेहदी मियाँ
ऐ शिकोही देख ले सय्यद बदी उद्दीन के
तरजुमाने सिलसिला हैं हज़रत मेहदी मियाँ

103

मनक़बत हुज़ूर फातेह अजमेर मरग़ूब आलम मियाँ मदारी बरेली

शुक्रे रब है मेरी निसबत फ़ातेह अजमेर से
मुझको है सच्ची अक़ीदत फ़ातेह अजमेर से
यह इबारत सय्ये आख़िर में रक़म है आज भी
हारी बातिल की जमाअत फ़ातेह अजमेर से
लमयज़ल अपने हबीबे पाक के सदके तुफ़ैल
प्यार करता है निहायत फ़ातेह अजमेर से
शाफ़ऐ महशर हैं उनके जद्दे आला इस लिए
हर कोई करता है उलफ़त फ़ातेह अजमेर से
किसको कहते हैं मदारी क्या हैं इसका मर्तबा
जान ली यह भी हक़ीक़त फ़ातेह अजमेर से
वह ना पायेगा इरम में दाख़िला रोज़े जज़ा
जो रखे बुग़ज़ व अदावत फ़ातेह अजमेर से
यह शिकोही है दरे कुतबे दो आलम का गदा
है जुड़ी उसकी अक़ीदत फ़ातेह अजमेर से

104

हदया सलातो सलाम बारगाहे महबूबे खुदा इमामुल अम्बिया रहमतुललिल आलामीन

सरवरे दुनिया व दीन बे सहारों के सहारे हुज़ूर पुरनूर आला हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम व खुलफ़ाए राशिदीन व अहलेबैत अतहारो औलियाए किराम रिज़वानु उल्लाह तआ़ला अलैहिम अजमईन

ऐ शफ़ीए रोज़ै महशर आप पर लाखो सलाम
ऐ क़सीमे जामे कौसर आप पर लाखो सलाम
देख कर चेहरा तुम्हारा रहमतुल लिलआलामीन
पढ़ रहे हैं माहो अख़्तर आप पर लाखो सलाम
पढ़ रहे हैं कुदसियाने अर्शे आज़म बा अदब
ऐ शहंशाहे पैयम्बर आप पर लाखो सलाम
आपके हाथो में है ऐ शाफ़ऐ हर आसियां
लाज सबकी रोज़े महशर आप पर लाखो सलाम
वजहे तख़लीक़े दो आलम ताजदारे अम्बिया
ऐ हबीबे रब्बे अकबर आप पर लाखों सलाम

105

बन्द मुठ्ठी में अबू जहले लईयीं के हाथ में
बे ज़बां पढ़ते हैं कंकर आप पर लाखो सलाम
झूमते जायेंगे आशिक जानिबे ख़ुल्दे बरीं
या रसूल अल्लाह पढ़ कर आप पर लाखो सलाम
राहे हक़ में कर दिया तुम ने फ़ना सब मालो ज़र
हज़रते सिद्दीक़े अकबर आप पर लाखो सलाम
हज़रते फ़ारूक़े आज़म और उस्माने ग़नी
आप सा है कौन रहबर आप पर लाखो सलाम
बाबे ख़ैबर तोड़ कर मरहब को मारा आपने
शेरे ख़ालिक मौला हैदर आप पर लाखो सलाम
आपकी इक सिज्दे करने में गुज़र जाती थी रात
फ़ातिमा बिन्ते पैयम्बर आप पर लाखो सलाम
ता क़यामत सब पढेंगे आशिक़ाने अहलेबैत
झूम कर शब्बीरो शब्बर आप पर लाखो सलाम
छोड़ दी तुमने हुकूमत दीने हक़ के वास्ते
ऐ हसन सिब्ते पैयम्बर आप पर लाखो सलाम

106

थे यज़ीदी फ़ौज पर भारी हुसैन इब्ने अली
तुम अकेले ही गज़ंफ़र आप पर लाखो सलाम
क़ासिम व औन व मोहम्मद अकबरो अब्बास व ख़र
असग़रो सज्जाद वाक़र आप पर लाखो सलाम
ऐ इमामे बू हनीफ़ा सुन्नियों की आबरू
जाफ़रे सादिक़ के मज़हर आप पर लाखो सलाम
मर्तबा मौला अली ने तुमको बख़्शा ऐ मदार
औलिया में सबसे बढ़कर आप पर लाखो सलाम
मोहसिने हिन्दुस्तां हज़रत मदारुल आलामीं
ऐ विलायत के समन्दर आप पर लाखो सलाम
कोई अरग़ूनी कोई तैफ़ूरी फन्सूरी कोई
फ़ातिमा की आले अतहर आप पर लाखो सलाम
अब्दे सुब्हां हज़रते दादा मियाँ ख़ुर्शीदे हक़
और निराले पीरे रहबर आप पर लाखो सलाम
पेशवाए अहलेसुन्नत हज़रत बाबा वली

107

लख़्ते ज़हरा शेरे हैदर आप पर लाखो सलाम
आबरू तुमने बचाई तुमने सिलसिले की हर जगह
हज़रते मरग़ूब क़ैसर आप पर लाखो सलाम
मेरे वालिद वाल्दा की लाज रखना हश्र में
ऐ शफ़ीए रोज़े महशर आप पे लाखो सलाम
ऐ मेरे उस्ताज़ यह सब आपकी हैं शफ़क़्कतें
ज़िन्दगी है मेरी नय्यर आप पर लाखो सलाम
सब्ज़ गुम्बद की शिकोही को हुज़ूरी बख्श दो
यह पढ़े तैबा पहुंच कर आप पर लाखो सलाम

108